Website : www.akhilbharathindumahasabha.org
E-mail : editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

प्रत्येक बुधवार को प्रकाशित

प्रति अंक मूल्य 4 रुपये

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

अखिल भारत हिन्दू महासभा का मुखपत्र

वर्ष- 41 अंक-46
कल्पादि सम्वत् 1972949117

सम्पादक
मुन्ना कुमार शर्मा

दिनांक 07 फरवरी से 13 फरवरी 2018 तक
माघ कृष्ण सप्तमी से फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी 2074 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये
पृष्ठ संख्या 12

खड़े होने पर लोगों.. पृष्ठ- 3

शाकाहारी बनें हृदय.... पृष्ठ- 4

इतिहास जिससे.. पृष्ठ- 5

पुणे का शनिवारवाडा... पृष्ठ- 8

अभी भी समय.. पृष्ठ- 12

- तो फिर क्यों बढ़ रही बेरोजगारी और मंहगाई
- व्यक्तिवाद, राष्ट्रवाद और राजनीति
- अविश्वसनीय-विघटन की नयी फाल्टलाईन के लिए हम जिम्मेदार
- भगवा दिवस पर भारद्वाज बोले आयोध्या में भगवान श्री राम का भव्य मंदिर बनकर रहेगा

पाकिस्तान में उठी मांग, शहीद भगत सिंह को दिया जाए सर्वोच्च वीरता पदक निशान ए हैदर

शहीद भगत सिंह पाकिस्तान के भी नायक थे—हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

पाकिस्तान के एक संगठन ने मांग की है कि शहीद ए आजम भगत सिंह को देश का सर्वोच्च वीरता पदक निशान ए हैदर दिया जाना चाहिए। लाहौर के शादमान चौक का नाम बदल कर भगत सिंह चौक रखने और उनकी प्रतिमा लगाई जाने की भी मांग की है। मांग उठाने वाला संगठन अदालत में स्वतंत्रा सेनानियों को निर्दोष साबित करने के लिए काम कर रहा है। भगत सिंह और उनके दो साथियों, राजगुरु और सुखदेव को गोरी हुकूमत के खिलाफ षडयंत्र और ब्रिटिश पुलिस अधिकारी शेष पृष्ठ 11 पर

अरुणाचल में चीन की चालाकी, फ्लाइंग मशीन से कर रहा भारत की जासूसी

चीन को करारा जवाब दे भारत सरकार—हिन्दू महासभा

• संवाददाता •

सुरक्षाबलों ने अरुणाचल प्रदेश—चीन सीमा पर उड़ने वाली एक संदिग्ध चीज देखी है। पूर्वी अरुणाचल प्रदेश में ये अनजान उड़ान मशीन भारत की सीमा में ५ किलोमीटर तक घुस आई थी और फिर दोबारा चीन की तरफ लौट गई, हैरान करने वाली बात ये है कि ये फ्लाइंग ओब्जेक्ट हर ५ सेकेंड में चमक रहा था। १८ दिसंबर को शाम ४ बजकर ५५ मिनट से ५ बजकर १५ मिनट के बीच ये फ्लाइंग ऑब्जेक्ट दिखा। कम रोशनी की वजह से ये पता नहीं चल पाया कि ये संदिग्ध चीज क्या है। खुफिया एजेंसियों को शक है कि चीन आधुनिक यंत्रों से भारत की जासूसी कर रहा है। भारतीय सेना और आईटीबीटी ने संयुक्त रिपोर्ट सरकार को भेजी है जिसमें बताया गया है कि १८ दिसंबर के बाद ८ बार चीनी सेना ने भारतीय क्षेत्र में घुसपैठ की कोशिश की है, उधर विवादित क्षेत्र में चीन की ओर से कुछ इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े काम करने की खबरें आ रही हैं। इस पर टिप्पणी करते हुए थलसेना प्रमुख जनरल बिपिन रावत ने कहा कि डोकलाम के बाद के घटनाक्रम में सेना को कोई गंभीर समस्या नजर नहीं आ रही, क्योंकि भारत एवं चीन नियंमित बातचीत कर रहे हैं और सौहार्द लौट आया है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत के सुरक्षा बल किसी भी आकस्मिक स्थिति से निपटने के लिए तैयार हैं, विवादित क्षेत्र में चीन की ओर से कुछ इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़े काम करने की खबरों के बीच जनरल शेष पृष्ठ 11 पर

वैवस्वत मनु की पौराणिक कथा

मत्स्य पुराण में उल्लेख है कि सत्यव्रत नाम के राजा एक दिन कृतमाला नदी में जल से तर्पण कर रहे थे। उस समय उनकी अंजुलि में एक छोटी सी मछली आ गई। सत्यव्रत ने मछली को नदी में डाल दिया तो मछली ने कहा कि इस जल में बड़े जीव जंतु मुझे खा जायेंगे। यह सुनकर राजा ने मछली को फिर जल से निकाल लिया और अपने कमंडल में रख लिया और आश्रम ले आये। रात भर में वह मछली बढ़ गई। तब राजा ने उसे बड़े मटके में डाल दिया। मटके में भी वह बढ़ गई तो उसे तालाब में डाल दिया। अंत में सत्यव्रत ने जान लिया कि यह कोई मामूली मछली नहीं जरूर इसमें कुछ बात है। तब उन्होंने ले जाकर समुद्र में डाल दिया। समुद्र में डालते समय मछली ने कहा कि समुद्र में मगर रहते हैं। वहाँ मत छोड़िये, लेकिन राजा ने हाथ जोड़कर कहा कि आप मुझे कोई मामूली मछली नहीं जान पड़ती हैं। आपका आकार तो अप्रत्याशित तेजी से बढ़ रहा है। बतायें कि आप कौन हैं। तब मछली रूप में भगवान विष्णु ने प्रकट होकर कहा कि आज से सातवें दिन प्रलय के कारण पृथ्वी समुद्र में डूब जायेगी। तब मेरी प्रेरणा से तुम एक बहुत बड़ी नौका बनाओ। और जब प्रलय शुरू हो तो तुम सप्त ऋषियों सहित सभी प्राणियों को लेकर उस नौका में बैठ जाना तथा सभी अनाज उसी में रख लेना। अन्य छोटे–बड़े बीज भी रख लेना। नाव पर बैठकर लहराते महासागर में विचरण करना। प्रचंड आँधी के कारण नौका डगमगा जायेगी। तब मैं इसी रूप में आ जाऊँगा। तब वासुकि नाग द्वारा उस नाव को मेरे सींग में बाँध लेना। जब तब ब्रह्मा की रात रहेगी, मैं नाव समुद्र में खींचता रहूँगा। उस समय जो तुम प्रश्न करोगे मैं उत्तर दूँगा। इतना कह मछली गायब हो गई। राजा तपस्या करने लगे। मछली का बताया हुआ समय आ गया। वर्षा होने लगी। समुद्र उमड़ने लगा। तभी राजा ऋषियों, अन्न, बीजों को लेकर नौका में बैठ गये। और फिर भगवान रूपी वही मछली दिखाई दी। उसके सींग में नाव बाँध दी गई और मछली से पृथ्वी और मछली से पृथ्वी और जीवों को बचाने की स्तुति करने लगे। मछली रूपी विष्णु ने उसे आत्मतत्व का उपदेश दिया। मछली रूपी विष्णु ने अंत में नौका को हिमालय की चोटी से बाँध दिया। नाव में ही बैठे–बैठे प्रलय का अंत हो गया। यही सत्यव्रत वर्तमान में महाकल्प में विवस्वान या वैवस्वत (सूर्य) के पुत्र श्राद्धदेव के नाम से विख्यात हुये। वही वैवस्वत मनु के नाम से भी जाने गये।

विषय-मध्य प्रदेश विधान सभा चुनाव २०१८

रामदेव जी अपनी राजनीतिक पार्टी खोलने की तैयारी कर रहे थे क्योंकि उनके अनुयाईयों की संख्या करोड़ों में हैं। २०१४ में भाजपा ने उन्हें वार्ता करके नई पार्टी शुरू न करने के लिए यह कहकर सहमत कर लिया कि उनके अनुयाईयों को लोकसभा के चुनाव में भाजपा का टिकट देंगे लेकिन उन्होंने एक को भी टिकट नहीं दिया। वायदा १०० प्रतिशत झूठा रहा। रामदेव ने कहा कि वे भाजपा के साथ नहीं हैं केवल मोदी के साथ हैं। अब आप रामदेव से मिलकर ज्ञापन देते हुए कहें कि हिन्दू महासभा, म० प्र० में २५–५० प्रत्याशियों को टिकट देने को तैयार है। रामदेव के प्रभाव से १५–२० प्रत्याशी जीत भी सकते हैं। वे भाजपा से अप्रसन्न हैं क्योंकि उसमें भी १५–२५ प्रतिशत अपराधी हैं। राम देव दयानन्द के समर्थक हैं जबकि भाजपा विवेकानन्द की समर्थक हैं। भाई परमानन्द –स्वामी श्रद्धानन्द– प्रो० राम सिंह–लाल लाजपतराय अदि आर्य समाजी ही थे। १९५२ में म० प्र० में १७ विधायक हिन्दू महासभा के चुने गए थे। उनसे कहा जाए कि दो महीनो में प्रत्याशियों की सूची भेज दें और अपने व्याख्यान में कहना शुरू कर दें म० प्र० विधानसभा में कहना शुरू कर दें म० प्र० विधानसभा के टिकट पर चुनाव लड़ रहे हैं या लड़ेंगे। अपनी ओर से पूरा प्रयास करें। स्वामी रामदेव के प्रभाव से पार्टी में जान पड़ सकती है। आशा है कि सक्रिय होकर कार्य करेंगे।

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

साप्ताहिक राशिफल

मेष : इस सप्ताह कुछ लोगों को संसाधन जुटाने में काफी मशक्कत करनी पड़ सकती है। दूर–दराज के लोगों से नजदीकी सम्बनध बनेंगे। अनावश्यक खर्चो पर विराम लगाने की जरूरत नजर आ रही है। व्यवसाय में हर तरफ कदम फूंक–फूंक कर बढ़ाने की जरूरत है।

वृष : इस सप्ताह आप जिस व्यक्ति की उपेक्षा करेंगे, सम्भवतः उसी से आपका कोई आवश्यक कार्य पड़ सकता है। रिश्ते–नातों में जरूरी सहयोग व सानिध्य बनायें रखना हितकर प्रतीत होगा। सुनियोजित ढ़ंग से किये गये निवेश लाभप्रद साबित होंगे।

मिथुन : इस सप्ताह आपकी प्रतिभा में निखार आयेगा किन्तु अहंकार से बचने की कोशिश करें। सम्बन्धों की कद्र करने से ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा व सम्मान बढ़ेगा। लाभकारी योजनाओं के प्रति अति शीघ्रता अहितकर हो सकती है।

कर्क : इस सप्ताह आपको विरोधियों का डटकर मुकाबला करना पड़ेगा जिससे सामाजिक मान–सम्मान में कुछ कमी आ सकती है। परिवार में आर्थिक समस्याओं पर विचार–विमर्श होगा जिससे भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे।

सिंह : इस सप्ताह प्राइवेट जॉब वाले जातकों का प्रमोशन होने की सम्भावना है। परिवार में सुख व समृद्धि रहेगी, नवीन योजनायें बनेगी। किसी चीज की चोरी होने की आशंका है। स्त्री सुख में बाधा उत्पन्न हो सकती है। प्रेम के मामलों में एक दूसरे के प्रति सहयोग बना रहेगा।

कन्या : परिवार में खुशी का माहौल रहेगा। जो लोग साझे या सहयोग से कार्य कर रहे हैं उनको थोड़ा सा सावधान रहने की जरूरत है। घर–परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार होने की संभावना है। कार्य व्यापार में वृद्धि होने की संभावना है।

तुला : इस सप्ताह आप धार्मिक क्रिया–कलापों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेंगे किन्तु धार्मिक आडम्बरों से बचें। पति–पत्नी में प्रेम बढ़ेगा और सन्तान के आगमन से घर में खुशी का माहौल बनेगा। रिश्तेदारों से इस समय दूरी ही बनाये रखना आपके लिए लाभदायक होगा।

वृश्चिक : आर्थिक मामले में इस समय कुछ सुधार जरूर होगा, लेकिन खर्चे की अधिकता के कारण धनाभाव की स्थिति बनी रहेगी। यदि आप व्यवसाय में साझेदारी करेंगे में तो उसके समय अनुकूल है। प्रथम स्थान पर शनि होने से जीवन साथी से तनाव की स्थिति बनी रहेगी।

धनु : इस सप्ताह कुछ लोगों को आकस्मिक धन लाभ के योग बनेंगे। धार्मिक कार्यो का घर में माहौल बना रहेगा। इन दिनों आपको अनिद्रा की भी शिकायत हो सकती है। किसी मित्र का सहयोग आपको लाभ दिलायेगा। गुरू की महादशा जिन जातको की चल रही है।

मकर : सुविचारित योजनाओं में प्रगतिशीलता के मार्ग प्रशस्त होंगे। पारिवारिक उठा–पटक में पहले की अपेक्षा काफी सन्तुलन नजर आयेगा। हर कार्य के प्रति दिलचस्पी ठीक है, लेकिल प्रत्येक कार्य को स्वंय करना उचित नहीं है। आफिस के रंग–ढंग में कुछ परिवर्तन नजर आयेगा।

कुम्भ : आमदनी के नये स्रोत बनने की संभावना है। अपने कार्य या व्यवसाय के अलावा धर्म–कर्म में भी रूचि बढ़ेगी। इस समय पडोसियों से सावधान रहे अन्यथा समस्या खड़ी हो सकती है। लम्बी यात्रा के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपका भाग्य आपके साथ होगा।

मीन : आप कुछ कर गुजरने की योग्यता का प्रर्दशन करेगें, जिससे आपकी एक नई पहचान बनेंगी। आमदनी की उतनी बढ़ोत्तरी नहीं होगी, जितनी आप अपेक्षा करेंगे। अस्थमा रोग से पीड़ित वाले व्यक्ति विशेष सावधानी बरतें। आपके परिवार में अचानक मतभेद उत्पन्न होगे।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते।।

अर्जुन बोले– इन तीनों गुणों से अतीत पुरुष किन–किन लक्षणों से युक्त होता है और किस प्रकार के आचरणों वाला होता है; तथा हे प्रभो! मनुष्य किस उपाय से इन तीनों गुणों से अतीत होता है?।।२१।।

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव।
न द्वेष्टि सम्प्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति।।

श्री भगवान् बोले– हे अर्जुन! जो पुरुष सत्त्वगुण के कार्यरूप प्रकाश को और रजोगुण के कार्यरूप प्रवृत्ति को तथा तमोगुण के कार्यरूप मोह को भी न तो प्रवृत्त होने पर उनसे द्वेष करता है और न निवृत्त होने पर उनकी आकांक्षा करता है।।२२।।

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङगते।।

जो साक्षी के सदृश स्थित हुआ गुणों के द्वारा विचलित नहीं किया जा सकता और गुण ही गुणों में बरतते हैं–ऐसा समझता हुआ जो सच्चिदानन्दघन परमात्मा में एकीभाव से स्थित रहता है एवं उस स्थिति से कभी विचलित नहीं होता।।२३।।

साप्ताहिक
हिन्दू सभा
वार्ता
दिनांक 07 फरवरी से 13 फरवरी 2018 तक

अध्यक्षीय

खड़े होने पर लोगों को कष्ट क्यों

पहले छावनी के सिनेमा हालों में लोगों को ब्रिटिश राष्ट्रगान, गॉड सेव द किंग के लिए खड़ा होना पड़ता था। सिनेमा हाल के दरवाजे बंद नहीं किए जाते थे और यह लोगों पर छोड़ दिया जाता था कि वह किस तरह का व्यवहार करते हैं। कोई बाध्यता नहीं थी, लेकिन यह उम्मीद की जाती थी कि जब ब्रिटिश राष्ट्रीय गान बजे तो आप खड़े हों। ब्रिटिश शासक जनता के अधिकार के प्रति संवेदनशील थे और उन्होंने इसे अनिवार्य नहीं बनाया था, या खड़े नहीं होने वाले के खिलाफ कोई दंडात्मक कार्रवाई भी नहीं थोपी थी। सन २००३ में महाराष्ट्र की विधान सभा ने एक आदेश पारित कर फिल्म शुरू होने से पहले राष्ट्रगान बजाया जाना अनिवार्य कर दिया था। १९६० के दशक में इसे फिल्म के अंत में बजाया जाता था। लेकिन लोग सिनेमा खत्म होने पर सीधे लाइन में बाहर निकल जाते थे, इसलिए इसे बंद कर दिया गया। मौजूदा कानून राष्ट्रगान के लिए खड़े होने या इसे गाने के उद्देश्य से किसी व्यक्ति को सजा नहीं देता या बाध्य नहीं करता। राष्ट्रीय सम्मान अपमान निवारण कानून १९७१ कहता है, जो कोई भी जानबूझ कर जनगण को गाने से रोकता है या इसके लिए जमा हुए लोगों के गाने में बाधा डालता है, उसे जेल की सजा, जिसकी मियाद तीन साल तक बढ़ाई जा सकती है या आर्थिक दंड या दोनों के जरिए दंडित किया जाएगा। आधिकारिक तौर पर राष्ट्रगान के बजाने की अवधि ५२ सेकेंड है,

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

लेकिन सिनेमा हाल में जो आमतौर पर बजाया जाता है वह इससे ज्यादा की अवधि का होता है। साल २०१५ में गृह मंत्रालय का एक आदेश कहता है जब भी राष्ट्रगान गाया या बजाया जाएगा, दर्शक सावधान की मुद्रा में खड़ा होगा। लेकिन किसी न्यूजरील या डाक्यूमेंटरी के दौरान अगर राष्ट्रगान फिल्म के हिस्से के रूप में बजाया जाता है तो दर्शक से खड़े होने की अपेक्षा नहीं की जाती है क्योंकि यह फिल्म के प्रदर्शन में अवश्य बाधा डालेगा और राष्ट्रगान के सम्मान को बढ़ाने के बदले अशांति तथा गड़बड़ी पैदा करेगा। और अभी तक कानून विशेष तौर पर कहता है कि इसे लोगों के बेहतर विवेक पर छोड़ दिया गया है कि वह राष्ट्रगान के अविवेक पूर्ण ढंग से गाने या बजाने का काम नहीं करें। इसके भी विशेष नियम बनाए गए हैं कि किसके लिए राष्ट्रगान बजाया जा सकता है राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री नहीं और कब लोग सामूहिक रूप से गान कर सकते हैं। जबकि सुप्रीम कोर्ट के आदेश को लागू करने और इसके उल्लंघन के लिए दंड के बारे में कोई स्पष्टता नहीं है, आजादी को लेकर निश्चित तौर पर लोगों की अपनी–अपनी धारणाओं की मिसाल हैं, जिनके बारे में कोर्ट का आदेश यही कहता है कि लोग इसका उपभोग सीमा से ज्यादा करते हैं और इसे राष्ट्रवाद के सिद्धांत की कीमत पर सही ठहराया जा रहा है। अभी की जो स्थिति है, उसमें सुप्रीम कोर्ट का कोई आदेश या कानूनी प्रावधान या प्रशासनिक निर्देश नहीं है जो राष्ट्रगान के समय लोगों को खड़ा होना अनिवार्य बनाता है। लोग ऐसा करते हैं, यह निश्चित तौर पर उनके व्यक्तिगत आदर की अभिव्यक्ति है। लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने फैसला दिया था कि सिनेमा हाल में फिल्म के प्रदर्शन के पहले राष्ट्रगान बजाया जाना चाहिए और सम्मान में सभी को खड़े होना चाहिए। लोगों को यह महसूस करना चाहिए कि वे एक राष्ट्र में रहते हैं और राष्ट्रगान तथा राष्ट्रीय झंडे का सम्मान करते हैं। अक्टूबर २०१७ में सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई के दौरान जस्टिस चंद्रचूड़ ने २०१६ के आदेश में परिवर्तन के संकेत दिए थे और कहा था क्यों लोगों को अपनी देशभक्ति बांह पर लगा कर चलना चाहिए, लोग विशुद्ध मनोरंजन के लिए थियेटर जाते हैं। समाज को इस मनोरंजन की जरूरत है। लेकिन सरकार ने कोर्ट से कहा था कि वह नवंबर २०१६ की स्थिति वापस लाने पर विचार कर सकती है जिसमें सिनेमा हालों के लिए राष्ट्रगान बजाना अनिवार्य नहीं था। सरकार ने कहा माननीय न्यायालय तब तक के लिए पहले की स्थिति बहाल करने पर विचार कर सकती है यानि ३० नवंबर २०१६ के निर्देश डी के पहले की स्थिति जिसमें फीचर फिल्म के शुरू होने के पहले राष्ट्रगान बजाना अनिवार्य किया गया है।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

तो फिर क्यों बढ़ रही बेरोजगारी और मंहगाई

इंडिया मीन्स बिजनेस इस नए लुभावने नारे के साथ हाथ जोड़े प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एक बड़ा सा पोस्टर दावोस शहर की एक इमारत पर चस्पा है। लोग इसे देखकर प्रधानमंत्री की मुख मुद्रा देखकर तय करें कि इस नारे को देने के पीछे उनकी मंशा क्या है। जब ९० के दशक में आर्थिक उदारीकरण ने भारत में दस्तक दी थी तो भारत यानी इंडिया को किसी व्यावसायिक प्रतिष्ठान की तरह तब के नेताओं ने दुनिया के सामने पेश किया था। देश को राजनीति की जगह अर्थनीति से चलाने की तरकीब ने जोर पकड़ा और यह समझाया गया कि किसी कंपनी के सीईओ की तरह देश के प्रधानमंत्रियों को काम करना चाहिए। बस तभी से भारत विश्व के आर्थिक मंचों पर शिरकत करने में अपना गौरव समझने लगा। इस गौरव को नई ऊंचाइयों पर ले जाते हुए हमारे प्रधानसेवक या कहें सीईओ मोदीजी भी स्विट्जरलैंड के दावोस शहर पहुंचे हैं। यहां वे वर्ल्ड इकानामिक फोरम की ४८वीं बैठक में अन्य वैश्विक नेताओं और लगभग २ हजार कंपनियों के सीईओज के साथ बातचीत करेंगे। उन्हें देश की नई आर्थिक संभावनाओं के बारे में बताएंगे। विदेशी कंपनियों को निवेश का न्यौता देंगे। दुनिया को बताएंगे कि उनकी सरकार ने काले धन को रोकने के लिए नोटबंदी का क्रांतिकारी कदम उठाया। जीएसटी लागू कर व्यापार को आसान करने की कोशिश की। जो बातें वे बिल्कुल नहीं बताएंगे, उनके बारे में आम भारतीय जानता है कि नोटबंदी के बाद उसे कितनी तकलीफ हुई। जीएसटी का फैसला इस तरह लिया गया कि उसे बार–बार सुधारना पड़ रहा है। मोदीजी यह भी नहीं बतलाएंगे कि उनके कार्यकाल में २०१५–१६ में भारत की जीडीपी ७.६ प्रतिशत थी, फिर २०१६–१७ में घटकर ७.१ प्रतिशत हुई और इस वित्तीय वर्ष में ६.५२ प्रतिशत होने का अनुमान लगाया जा रहा है। देश को आर्थिक मोर्चे पर सरकारी नीतियों के कारण कहां–कहां हानि हुई, अगर यह सच दुनिया के सामने आए तो विदेशी व्यापारी यहां क्यों आएंगे। यूं भी दावोस में बर्फबारी के कारण सुहावना मौसम और नजारा है, तो बातें भी अच्छी–अच्छी, प्यारी–प्यारी होनी चाहिए। तो एक अच्छी बात इंटरनैशनल मॉनिट्री फंड की रिपोर्ट में सामने आई है कि २०१८ में ७.४ फीसदी की विकास दर से भारत सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था होगी। इधर प्राइसवॉटर हाउस कूपर्स के सर्वे में यह बात सामने आई है कि निवेशकों के लिए भारत दुनिया की पांचवीं सबसे आकर्षक जगह है। पीडब्ल्यूसी का मानना है कि सरकार ने बुनियादी ढांचा, मैन्युफैक्चरिंग और कौशल निर्माण के क्षेत्रों से जुड़ी चिंताओं को समाधान किया है। अब ये चिंताएं कौन थींऔर उनका कैसा समाधान निकला, इस बारे में आम जनता को क्या बताना। बड़े लोगों के बीच वैसे भी छोटे दखल नहीं देते। अच्छी खबर यह भी है कि इस वित्त वर्ष की पहली छमाही में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में १७ प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। २०१६–१७ में पहली बार एफडीआई ६० बिलियन डॉलर यानी करीब ४००० अरब रुपये से ज्यादा रहा। रिजर्व बैंक की भी एक रिपोर्ट सामने आई है कि भारत में एफडीआई का सबसे बड़ा स्रोत देश मॉरीशस है। यानी यहां से सबसे ज्यादा निवेश देश में हो रहा है। वैसे यह बात थोड़ी चौंकाती भी है क्योंकि मॉरीशस को टैक्स हैवन भी माना जाता है, जहां से हवाला के जरिए भारत के काले धन को सफेद करने में आसानी होती है। बहरहाल जब इतने अरबों रुपए विदेशों से भारत में आ रहे हैं, तो फिर भी युवाओं को रोजगार क्यों नहीं मिल रहा, महंगाई क्यों बढ़ रही है, इतने रुपए आखिर किसके पास जा रहे हैं। इन सवालों का जवाब भी दावोस की बैठक के पहले सामने आया है। इंटरनैशनल राइट्स ग्रुप ऑक्सफैम के सर्वे में यह खुलासा हुआ है कि पिछले साल भारत में जितनी संपत्ति का निर्माण हुआ, उसका ७३ प्रतिशत हिस्सा देश के १ प्रतिशत धनाढ्य लोगों के पास गया। पिछले साल के सर्वे में भारत की सबसे धनी १ प्रतिशत आबादी के पास देश की कुल ५८ प्रतिशत संपत्ति होने की बात कही गई थी। इस साल इस १ प्रतिशत आबादी की संपत्ति २०.९ प्रतिशत बढ़ी। रिवॉर्ड वर्क, नॉट वेल्थ के नाम से जारी रिपोर्ट में ऑक्सफैम ने यह उजागर किया है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था ने कैसे धनाढ्यों के समूह को अकूत संपत्ति प्रदान की जबकि लाखों–करोड़ों लोग गरीबी रेखा से नीचे होने के कारण सरकारी योजनाओं के सहारे जीने का संघर्ष कर रहे हैं। हैरानी की बात नहीं है कि इंडिया मीन्स बिजनेस का नारा बुलंद करते हुए मोदीजी दावोस में अपने साथ जो व्यापारिक प्रतिनिधि मंडल ले गए हैं, उसमें ये १ प्रतिशत वाले लोग ही शामिल हैं। बाकी ९९ प्रतिशत जनता को अभी यह समझ ही नहीं पा रही कि उसके देश का मतलब व्यापार कैसे हो गया। क्या अब भारत माता की जय की जगह व्यापार की जय बोलेंगे।

राष्ट्रीय आह्वान
मुन्ना कुमार शर्मा
राष्ट्रीय महासचिव

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

शाकाहारी बनें हृदय रोगों का खतरा कम करें

कोलेस्ट्रॉल और हृदय रोग

बढ़ते रक्त कोलेस्ट्रॉल का सीधा संबंध एथ्रीमोस्कोरोसिस और हृदय रोगों से अनेक अध्ययनों से निर्विवाद सिद्ध हुआ है। रक्त कोलेस्ट्रॉल का स्तर १५० mg प्रति १०८ mg से कम होता है तो हार्ट अटैक की संभावना नहीं के बराबर होती है। रक्त कोलेस्ट्रॉल का स्तर २५० mg से ज्यादा होने पर हृदय धमनी रोगों का खतरा कई गुना बढ़ जाता है। यदि रक्त कोलेस्ट्रॉल स्क्स कोलेस्ट्रॉल स्तर पर नियंत्रण रखा जाता है, तो कोरोनरी धमनी रोगों, उच्च रक्तचाप इत्यादि रोगों की संभावना कम होती है।

कोलेस्ट्रॉल की भोजन में जरूरत लगभग ३०० mg प्रतिदिन होती है। यह सिर्फ जानवरों से प्राप्त भोज्य पदार्थों जैसे गोश्त, चिकन, मछली, अंडे की जर्दी, दूध, दुग्ध पदार्थों इत्यादि में मौजूद होता है, जबकि यह वनस्पति से प्राप्त भोज्य पदार्थों—अनाजों, दालों, फलों, सब्जियों इत्यादि में नहीं पाया जाता है।

रक्त कोलेस्ट्रॉल पर नियंत्रण के लिए शाकाहारी भोजन करना चाहिए। दूध की मलाई, क्रीम निकालकर और इसी दूध से निर्मित दुग्ध पदार्थों (दही, मट्ठा इत्यादि) का सेवन करना चाहिए।

वसा और हृदय रोग

वसा सेवन, रक्त वसा स्तर का घनिष्ठ संबंध, हृदय धमनी रोगों, उच्च रक्तचाप, मोटापे से होता है। वसा से अन्य भोज्य पदार्थों, शर्करा, प्रोटीन से ज्यादा कैलोरी प्राप्त होती है। ज्यादा मात्रा में वसा सेवन करने से वजन बढ़ने, मोटे होने की संभावना रहती है और रक्त ट्राईग्लिसराइड स्तर बढ़ने से एथ्रीमोस्कोरोसिस की प्रक्रिया तीव्र गति से होती है।

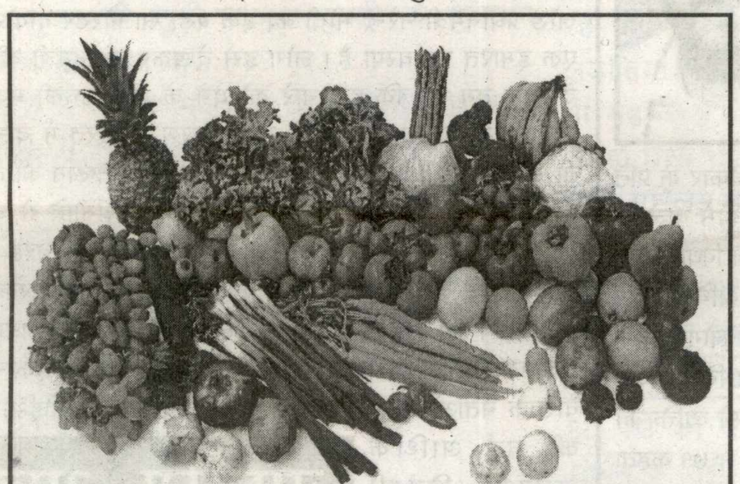

अतः वसा (तेल, घी, बटर इत्यादि) का सेवन सीमित मात्रा में करना चाहिए। भोजन में वसा द्वार प्रदत्त कैलोरी की मात्रा कुछ कैलोरी की जरूरत की २५ प्रतिशत से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। ज्यादातर शाकाहारी भोज्य पदार्थों में प्राकृतिक रूप से वसा की मात्रा (सूखे मेवाओं, मूँगफली, तेलों के बीजों के अतिरिक्त) माँसाहारी भोज्य पदार्थों की अपेक्षा कम होती है। वसा के स्वरूप का भी घनिष्ठ संबंध काष्ठीयकरण (एथ्रीमोस्कोरोसिस) से होता है। ज्यादा मात्रा में संतृप्त वसा सेवन से हृदय रोगों का खतरा बढ़जाता है। जबकि प्यूफा और एकल असंतृप्त वसा सीमित मात्रा में सेवन करने से हृदय रोगों का खतरा नहीं बढ़ता। संतृप्त वसा प्रचुर मात्रा में मांसाहारी भोज्य पदार्थों (गोश्त, चिकन, दूध, अंडे की जर्दी), मछली को छोड़कर ज्यादा मात्रा में होते हैं। जबकि नारियल तेल और पॉम ऑयल को छोड़कर अन्य वनस्पति तेलों में असंतृप्त वसा पर्याप्त अनुपात में होती है। इनके सीमित मात्रा में सेवन से हृदय रोगों की संभावना कम होती है। अतः जानवरों से प्राप्त वसा—देसी घी, मक्खन, बटर, चर्बी का सेवन नहीं करें या सीमित मात्रा में करें। वनस्पति घी, मारजीन में भी संतृप्त वसा और ट्रांसफैटी एसिड होते हैं। इनका भी सेवन न करें। भोजन को न्यूनतम मात्रा में वनस्पति तेलों द्वारा पकाना चाहिए।

फाइबर और हृदय रोग

रेशों (डायट्री फाइबर) का मानव की आँतों में पाचन, अवशोषण नहीं हो पाता है, पर यह आँतों में ही रहकर शरीर के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके पर्याप्त मात्रा में मौजूद होने से (३०–४० mg प्रतिदिन) कब्ज नहीं होती, साथ ही रक्त कोलेस्ट्रॉल स्तर, ग्लूकोज स्तर नियंत्रण में होता है, जिसके परिणामस्वरूप एथ्रीमोस्कोरोसिस, मधुमेह की संभावना कम हो जाती है।

रेशे सिर्फ शाकाहारी भोज्य पदार्थों, अनाजों, दालों, फलों-सब्जियों में मौजूद होते हैं, जबकि जानवरों से प्राप्त भोज्य पदार्थों में नहीं पाये जाते। भोजन में ३०–४० हउ प्रतिदिन रेशे होने जरूरी हैं, अतः स्वस्थ रहने के लिए मांसाहारियों के भोजन में भी शाकाहारी भोज्य पदार्थों—फलों, सब्जियों, दालों, अनाजों का समावेश होना आवश्यक है। यदि पर्याप्त मात्रा में रेशों का सेवन नहीं किया जाता तो हृदय रोगों, उच्च रक्तचाप, मधुमेह, आँतों के कैंसर, कब्ज इत्यादि का खतरा बढ़ जाता है। रेशे फलों—सब्जियों में मौजूद होते ही हैं, साथ ही पर्याप्त मात्रा में रेशों के सेवन के लिए साबुत दालों, चोकर सहित आटे की चपाती, ब्राउन ब्रेड का सेवन करना चाहिए।

हृदय रोगों से बचाव के लिए भोजन

स्वास्थ्यवर्धक संतुलित भोजन में वजन, कार्यशैली, सक्रियता के अनुसार पर्याप्त कैलोरी तथा अन्य पोषक तत्त्व आवश्यक मात्रा और सही अनुपात में होने चाहिए, जिससे शरीर का वजन नियंत्रित रहे और सभी पोषक तत्त्वों की आपूर्ति होते रहे। भोजन में वसा की मात्रा कुल कैलोरी आवश्यकता की २०–२५ प्रतिशत होनी चाहिए। वसा भी संतृप्त मोनोअनसेचुरेटेड और प्यूफा बराबर अनुपात में होने चाहिए। भोजन में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा ३०० mg से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। स्वास्थ्यवर्धक भोजन में करीब ३०–४० mg रेशे मौजूद होने चाहिए। नमक की मात्रा ५–६ mg से कम तथा प्रचुर मात्रा में एण्टीऑक्सीडेंट, फाइटोकैमिकल्स होने चाहिए। सिगरेट, तम्बाकू, गुटखे, शराब का सेवन नहीं करना चाहिए। हर व्यक्ति को वजन नियंत्रित रखना चाहिए, यदि ज्यादा है तो कम करें। सक्रिय रहें, नियमित व्यायाम करें, तनाव, चिन्ता मुक्त रहें, सकारात्मक विचार रखें।

वयस्कों को नियमित अन्तराल पर रक्तचाप, रक्त ग्लूकोज, रक्त कोलेस्ट्रॉल, वसा स्तर की जाँच करवानी चाहिए। कोलेस्ट्रॉल स्तर २० mg ट्राइग्लिसराइड १०० mg., LDL स्तर १५० mg से कम और भ्क्स कोलेस्ट्रॉल स्तर पुरुषों में ३५ mg महिलाओं में ४५ mg से ज्यादा होना चाहिए। यदि इनमें असमानता है तो भोजन पर और कड़ाई से नियंत्रण करें, आवश्यक होने पर दवाएँ सेवन करें।

शाकाहारी भोजन सेवन में सावधानियाँ

भोजन भूख से कुछ कम मात्रा में सेवन करें। भोजन को कम से कम मात्रा में वनस्पति तेलों में पकाएँ। वनस्पति घी का सेवन न करें। देसी घी प्रतिदिन ४–५ mg से ज्यादा सेवन न करें। तले भोज्य पदार्थों का सेवन कम से कम मात्रा में करें। सरल शर्करा (चीनी, ग्लूकोज, शहद) परिष्कृति भोजन पदार्थों जैसे—मैदा, सूजी, धुली दालों का कम से कम सेवन करें। चोकर सहित आटे की रोटी, ब्राउन ब्रेड, साबुत दालों, मोटे अनाजों का सेवन प्रचुर मात्रा में करें। चीनी, मिठाई, नमक का सीमित मात्रा में सेवन करें। दूध—मलाई, क्रीम निकालकर (स्क्रीयड) और इसी दूध से निर्मित दुग्ध पदार्थों का सेवन करें। फास्ट—फूड में सरल शर्करा, संतृप्त वसा, नमक, चीनी इत्यादि की अधिकता होती है और स्वास्थ्य वर्धक पोषक तत्त्वों, प्रोटीन, फाइबर्स, खानिज लवणों, विटामिन्स, एंटीऑक्सीडेंट की कमी, अतः इनको कड़ा भोजन (जंक फूड) कहा जाता है, इनका सेवन यदा—कदा सीमित मात्रा में करना चाहिए। फलों, सब्जियों का प्रचुर मात्रा में सेवन करें। छिलकों में अनेक स्वास्थ्यवर्धक तत्त्व होते हैं, अतः इनको न निकालें या कम से कम निकालें। रोगों से बचाव एवं अनेक रोगों से उपचार में भोजन की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः संतुलित भोजन कर संयमित जीवन व्यतीत कर हृदय रोगों के साथ अन्य रोगों से भी बचाव संभव है।

डायबिटीक फुट एण्ड केयर

मानसून के मौसम में हमें पैरों का खास ख्याल रखने की जरूरत होती है और अगर किसी को डायबिटीज है तो उसे और भी अधिक एहतियात बरतनी चाहिए। डायबिटीज में डायबिटीक फुट की समस्याएँ इस मौसम में बढ़ जाती हैं। लगभग सभी डायबिटीज के मरीजों को डायबिटिक पैरों से संबंधी परेशानियाँ रहती हैं तो जानिए मानसून में कैसे करें डायबिटीज के मरीज अपने पैरों की देखभाल मधुमेह रोगियों के लिए मानसून में पैरों की देखभाल के कुछ टिप्स।

क्यों जरूरी है देखभाल

१. डायबिटीक पेशेंट सूती मोजे पहनें क्योंकि सूती मोजे नमी को आसानी से सोख लेते हैं। इसलिए मानसून में मधुमेह रोगियों को नॉयलान के मोजे की जगह कॉटन के मोजे पहनने चाहिए। अपने मोजों को रोजाना बदलने में देरी ना करें।

२. डायबिटीक फुट के मरीजों के लिए नंगे पाँव चलना अच्छा नहीं होता क्योंकि ऐसे में घावों के होने की अधिक संभावना रहती है और कीटाणुओं और सूक्ष्मजीवों को बढ़ने का मौका मिलता है। यहाँ तक कि जब आप अपने घर में हैं तब भी जूते या चप्पल पहनें।

३. गीले पैरों को ठीक प्रकार से साफ करने के बाद उन्हें सुखाने के बाद ही जूते पहनें। ऐसे मौसम में आसानी से सूखने वाले खुले जूते—चप्पल पहनें।

४. हफ्ते में एक दिन जूतों को कुछ देर धूप में रखें, जिससे उसमें मौजूद सूक्ष्मजीवी या फफूंद नष्ट हो जाएँ।

५. घाव, कटना और कॉर्न्स नियमित रूप से जाँच करते रहें। यदि आपकी पैरों की त्वचा रूखी है या फिर उसमें खुजली है, तो डॉक्टर से परामर्श करें।

शेष पृष्ठ 10 पर

इतिहास जिससे हम अभी दूर है

✍ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने भारत की उन्नति ही नहीं अपितु विश्व की शान्ति व श्रेष्ठता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। विश्व की श्रेष्ठता के लिए वेद का ज्ञान अत्यधिक आवश्यक है; बिना वेद ज्ञान के मानव का उत्थान नहीं हो सकता। आर्य समाजों की स्था[illegible] मुख्य उद्देश्य ही [illegible] का उपकार करना था और उसके लिए आर्यों द्वारा वेद प्रचार करना आवश्यक है, जिससे विश्व की आत्मिक उन्नति हो सके।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में इतिहास विषय पर प्रकाश डालते हुए चक्रवर्ती शासकों व चक्रवर्ती राज्य की श्रेष्ठता बताई है। उन्होंने चक्रवर्ती राजाओं के विषय में बताया है कि प्राचीन काल में इनका सार्वभौम चक्रवर्ती शासन था। ये राजा आर्य कुल में ही हुए हैं।

"...यहाँ सुद्युम्न, भूरिद्युम्न, इन्द्रद्युम्न, कुवलयाश्व, यौदनाश्व, वद्ध्रयाश्व, अश्वपति, शशविन्दु, हरिश्चन्द्र, अम्बरीश,ननक्तु, सर्याति, ययाति, अनरण्य, अक्षसेन, मरुत और भरत सार्वभौम सब भूमि में प्रसिद्ध चक्रवर्ती राजाओं के नाम लिखे हैं।" (सत्यार्थ प्रकाश–एकादश समु.)

यही नहीं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यावर्त देशीय राजवंशावली को प्रकाशित किया है जिसमें श्री मन्महाराज 'युधिष्ठिर' से महाराज 'यशपाल' तक वंश अर्थात पीढ़ी अनुमान १२४ (एक सौ चौबीस राजा) वर्ष ४१५७, मास ६, दिन १४ इतना समय हुआ। इसका वर्णन एकादश समुल्लास में किया है और समस्त राजाओं के शासन काल (कुल समय) का वर्णन भी जैसा कि राजा युधिष्ठिर ने ३६ वर्ष, ८ मास और २५ दिन शासन किया। उनके पश्चात् राजा परीक्षित ने ६० वर्ष शासन किया आदि–आदि।

महर्षि ने लिखा है कि यह वृतान्त उन्होंने 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' और मोहन चन्द्रिका जो कि पाक्षिक पत्र श्री नाथ द्वारे से निकलता था जो राजपूताना देश मेवाड़ राज उदयपुर चित्तौड़गढ़ में सबको विदित है उससे अनुवाद किया था।

यही नहीं ऋषि दयानन्द ने समस्त मत मतान्तरों के धर्मग्रन्थों का अध्ययन किया, पुराण व अन्य सभी पुस्तकों को पढ़ा। भारत में चारों ओर गये, वेद प्रचार किया। उन्होंने जो सत्य था वह सबके सामने रखा। इतना सब ज्ञान–विज्ञान जो उन्होंने पुस्तकें लिखी हैं कठोर शारीरिक व मानसिक श्रम करने के पश्चात ही लिखीं। फिर भी उन्होंने लिखा है कि "यदि ऐसे ही हमारे आर्य सज्जन लोग इतिहास और विद्या पुस्तकों को खोजकर प्रकाश करेंगे तो देश को बड़ा ही लाभ पहुँचेगा।"

महर्षि चाहते थे कि आर्य जन ऐसी ही ऐतिहासिक पत्र–पत्रिकाओं से ज्ञान–विज्ञान के विषय खोजें। उस समय भारत में अनेक रियासतें थीं, छोटे–छोटे राज्य रजवाड़े थे, आज भी उन रजवाड़ों के वंशज इधर–उधर जाकर बस गये हैं, पूरे भारत में फैले हुए हैं। उनकी वंशावली को पीढ़ी दर पीढ़ी कुल संबंधित व्यक्ति जिन्हें स्थानीय भाषा में जगा आदि नाम से जाना जाता है। उन पर विभिन्न सम्बन्धित वंशों का विवरण है, यह भी ऐतिहासिक धरोहर है। उसको लेकर अध्ययन व शोध करना चाहिए। इधर–उधर बिखरे हुए इतिहास को क्रमबद्ध करना चाहिए। अनेक विद्यालय व संस्थाएँ रजवाड़ों के समय थीं, वहाँ पुस्तकालय व संग्रहालय भी थे, वहाँ भी ध्यान देना चाहिए, वहाँ भी प्राचीन ज्ञान–विज्ञान व इतिहास की सामग्री मिल जाएगी। हालाँकि हमारा प्राचीन साहित्य विदेशी लूटकर चोरी करके ले गये, अनेक प्राचीन ग्रन्थों का अनुवाद करके ले गये और जो यहाँ रह गया उसको आग की भेंट कर दिया था। भारत भूमि पर प्राचीन काल में सब कुछ अन्वेषण होते थे। वराह मिहिर, लगध मुनि, गौतम, कणाद, तुरकावषेय, विदुर, चाणक्य, मनु महाराज जैसे अनेकों महान विद्वान् यहाँ हुए थे। ईसा से छह सौ वर्ष पूर्व चरक व सुश्रुत का संकलन किया गया, सांख्य व वैशेषिक दर्शन लिखे गये। जितना भी संस्कृत साहित्य है, उसमें ज्ञान–विज्ञान व इतिहास के विषय हैं। आज भारत में जो खंडहर हैं वे भी हमारी ऐतिहासिक धरोहर हैं। वे चक्रवर्ती शासकों की वीरता की गाथाओं की याद दिलाते हैं। इन्द्रप्रस्थ का किला, चित्तौड़ का किला, जौहर स्मृति संस्थान, हस्तिनापुर का किला, मगध का किला व गुफाएँ, मोहन जोदड़ो, नालंदा व तक्षशिला के खंडहर प्राचीन उस भीषण युद्ध व नरसंहार की विभीषिका की याद दिलाते हैं, थानेसर, सोमनाथ, मथुरा, काशी के मन्दिर जो विदेशी लुटेरों ने तोड़े थे वहाँ भी हमारे वीर योद्धाओं का इतिहास लिखा है और स्वतंत्रता संग्राम की बड़ी व लम्बी लड़ाई को भारत ने हाल में देखा ही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का ऐसा विचार था कि हमें प्राचीन साहित्य व विद्या की पुस्तकों का सम्यक अध्ययन व शोध कर आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श के रूप में लिखकर रखना, प्रकाशित करना चाहिए।

जहाँ मैकाले जैसा ने भारतीय संस्कृति को नष्ट कर पाश्चात्य संस्कृति में ढालने का पूरा यत्न किया वह चाहता था कि अंग्रेज यहाँ से भले ही चले जाएँ परन्तु अंग्रेजियत का ऐसा बीज बो जाएँगे कि भारत भूमि पर ही अंग्रेज (काले अंग्रेज) पैदा होने लगेंगे। मैक्समूलर ने वेदों का विकृत अर्थ किया। सायण, महीधर व उव्वट ने वेदों में अश्लीलता का अर्थ कर दिया। उनका प्रयोजन यही था कि भारतीय अपनी संस्कृति से घृणा करने लगें और अंग्रेजी संस्कृति को अपना लें।

इसलिए विदेशियों ने वेदों का अर्थ विपरीत कर दिया। वेदों में पशु मांस आदि की आहुति, पशु व नर बलि बताने लगे। जादू–टोना को वेद में लिखा बताने लगे। यही नहीं अंग्रेजी काल में भारत में भारतीयों के मध्य भारतीय संस्कृति का उपहास करते थे। आज भी शेराल्ड पोलाक जैसे कोलम्बिया विश्वविद्यालय के विद्वान कहे जाने वाले भारतीय संस्कृति, वेद व संस्कृत भाषा को अर्थहीन व व्यर्थ बताते हैं। अनेक विदेशियों को भारतीय संस्कृति को व्यर्थ बाताने में संकोच नहीं होता।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें अपने बिखरे हुए समस्त इतिहास व इतिहास पुस्तकों का, साहित्य का, प्राचीन खंडहर व धरोहरों शेष पृष्ठ 10 पर

भगवान शिव को प्रसन्न करने का पर्व महाशिवरात्रि

महाशिवरात्रि का व्रत फाल्गुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को किया जाता है। मान्यता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में इसी दिन मध्य रात्रि भगवान शंकर का ब्रह्मा से रुद्र के रूप में अवतरण हुआ था। प्रलय की वेला में इसी दिन प्रदोष के समय भगवान शिव तांडव करते हुए ब्रह्माण्ड को तीसरे नेत्र की ज्वाला से समास कर देते हैं। इसीलिये इसे महाशिवरात्रि अथवा कालरात्रि कहा गया है। देवों के देव महादेव के इस व्रत का विशेष महत्व है। इस व्रत को सभी कर सकते हैं। विधि विधान से तथा स्वच्छ भाव से जो भी यह व्रत रखता है, भगवान शिव प्रसन्न होकर उसे अपार सुख संपदा प्रदान करते हैं। विधान–त्रयोदशी को एक बार भोजन करके चतुर्दशी को दिन भर निराहार रहना पड़ता है। पत्र पुष्प तथा सुंदर वस्त्रों से मंडप तैयार करके वेदी पर कलश की स्थापना करके गौरी शंकर की स्वर्ण मूर्ति तथा नन्दी की चांदी की मूर्ति रखनी चाहिए। कलश चंदन, दूध, घी, शहद, कमलगट्टा, धतूरा, बेल पत्र आदि का प्रसाद शिव को अर्पित करके पूजा करनी चाहिए। रात को जागरण करके चार बार शिव आरती का विधान जरूरी है। दूसरे दिन प्रातः जौ, तिल, खीर तथा बेलपत्र का हवन करके ब्राह्मणों को भोजन करवाकर व्रत का पालन करना चाहिए।

भगवान शंकर पर चढ़ाया गया नैवेद्य को खाना निषिद्ध है। जो इस नैवेद्य को खा लेता है वर नरक को प्राप्त होता है इस कष्ट के निवारण के लिए शिव की मूर्ति के पास शालिग्राम की मूर्ति रखते हैं। यदि शिव की प्रतिमा के पास शालिग्राम की मूर्ति होगी तो नैवेद्य खाने पर कोई दोष नहीं लगता है।

भगवान शिव और उनका नाम समस्त मंगलों का मूल है। वे कल्याण की जन्म भूमि तथा परम कल्याणमय हैं। समस्त विद्याओं के मूल स्थान भी भगवान शिव ही हैं। ज्ञान, बल, इच्छा और क्रिया शक्ति में भगवान शिव के जैसा कोई नहीं है। वे सभी के मूल कारण, रक्षक, पालक तथा नियन्ता होने के कारण महेश्वर कहे जाते हैं। उनका आदि और अंत न होने से वे अनंत हैं। वे सभी पवित्रकारी पदार्थों को भी पवित्र करने वाले हैं। वे शीघ्र प्रसन्न होकर अपने भक्तों के सम्पूर्ण दोषों को क्षमा कर देते हैं तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ज्ञान, विज्ञान के साथ अपने आपको भी दे देते हैं।

व्यक्तिवाद, राष्ट्रवाद और राजनीति

✍ विनोद कुमार सर्वोदय

व्यक्तिवाद

विश्व के एकमात्र विशाल संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की राष्ट्रवाद, सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षार्थ डॉ० हेडगेवार जी ने कुछ समर्पित महान विभूतियों के साथ अपने अथक पराक्रम से स्थापना की थी। भारतीय संस्कृति व सभ्यता की रक्षार्थ अपने अनेक आनुषांगिक संस्थाओं द्वारा इस विश्वव्यापी संगठन के दशकों से चल रहें अतुलनीय व प्रशंसनीय सामाजिक व राष्ट्रीय कार्यों की श्रृंखला को बांधना असंभव तो नही परंतु कठिन अवश्य होगा। इन अनुशासित संगठनों के लाखों–करोड़ों समर्पित कार्यकर्ताओं का आदर्श प्रतीक रुप में केवल भगवा रंग से सुशोभित झंडा सर्वोच्च व पूजनीय हैं। लेकिन यह अत्यंत दुःखद है कि आधुनिक युग में राजनीतिज्ञों की बढ़ती चाटूकारिता व स्वार्थी प्रवृति ने व्यक्ति विशेष को ही राष्ट्र व धर्म से भी ऊपर उठकर महान बना कर व्यक्तिवाद को बढ़ावा देने की मानसिकता की चपेट से ऐसे संगठन भी अछूते नही रहें हैं। राष्ट्रीय व प्रदेशीय स्तर के नेताओं को छोड़ भी दिया जाय तो सामान्यतः ग्राम पंचायत, नगर, महानगर व जनपद के भी कार्यकर्ता नेता बनकर अपने अपने अभिनंदन व स्वागतों के कार्यक्रमों के आयोजन के अतिरिक्त स्थान–स्थान पर चित्रों सहित बड़े बड़े बैनर व बोर्ड लगवाने की होड़ में भी पीछे नही रहते। ऐसी आत्मस्तुति की प्रस्तुति में व्यस्त रहने से भी लोकतांत्रिक राजनीति में अधिकांश आदर्शवादी नेता अपने अपने सिद्धांतो पर अडिग नही रह पाते। परिणामस्वरुप राजनीति में सफल होकर शीर्ष पर पहुँच कर भी उनको एक सामान्य मानव की भांति पदलोलुपता व आत्मप्रवंचना की प्रवृत्ति का मद जकड़ लेता हैं। इसीलिए जिन मुख्य राष्ट्रवादी विचारों के कारण राजनीति के शिखर पर पहुँचने में सफल होते हैं उन्ही मुख्य बिंदुओं को भुला देना ऐसे दुर्बल नेताओं का स्वभाव बन चुका हैं। यह मानवीय दुर्बलता राष्ट्रवादी नेताओं को भी समझौतावादी बनने को विवश कर देती हैं। क्योंकि आज सारा समाज आधुनिक विलासता का जीवन जीने की सर्वोकृष्ट इच्छा रखता हैं तो फिर वह ऐसे बिंदुओं पर न कोई चर्चा करता और न कोई चिंतन। बल्कि ऐसा समाज केवल अपने स्वार्थो की पूर्ति हेतु ही इन नेताओं के गुणगान करने को उत्साहित रहता हैं। हम जैसे निस्वार्थ हजारो–लाखों राष्ट्रवादी इसीलिए बार बार ठगे जाते है और ठगे जाते रहेंगे। क्या सत्य सनातन वैदिक धर्म व संस्कृति की रक्षा करना प्रत्येक भारत भक्त का धर्म नही हैं? हम अगर निस्वार्थ राष्ट्रभक्ति के लिए समर्पित हैं तो हमें अपने नेताओं की चापलूसी से बच कर उनमें बढ़ती आत्मप्रवंचना की मानसिकता को रोकना होगा। भारत मेरी जन्म, मातृ, पितृ ,पूण्य व धर्म भूमि है ऐसा स्वाभिमान जगा कर हम सब व्यक्तिवाद को तिलांजलि दें तभी एक उत्तम राष्ट्र निर्माण की अवधारणा फलीभूत हो सकेगी।

राष्ट्रवाद

जिस प्रकार आज देश में राष्ट्रवादी शक्तियों के विरुद्ध अनेक षडयंत्र रचे जा रहें हैं, वह भविष्य में एक बड़े संकट की घण्टी बजने जैसा चेताने वाला अलार्म है। फिर भी राष्ट्रवादी नेता अपने अपने पदों पर सुशोभित हो कर अनेक राष्ट्रवादी कार्यों में लगे अपने ही कार्यकर्ताओं की सहायता करने के स्थान पर उनके कार्यो को अपराध मानकर होने वाली कानूनी प्रक्रिया होने पर भी कोई संवेदना नही रखते। घर वापसी, लव जिहाद व गऊ रक्षा संबंधित अनेक राष्ट्रवादी कार्यों में जुटे रहने वाले सैकड़ो–हजारों कार्यकर्ता आज अपनी ही सरकार में उपेक्षित है और प्रताड़ित हो रहें हैं। इस प्रकार राष्ट्रवादियों की बार बार उपेक्षा होते रहने से क्या राष्ट्रभक्तों का मनोबल नही टूटेगा? क्या राष्ट्रभक्तों के मूल्यांकन में कभी कोई सुधार होगा या वे योंही समझौतावादी राजनीति के शिकार होते रहेंगे? क्या ऐसे में देशभक्तों का देश की राजनीति से मोहभंग नही होगा? जबकि आधुनिकता की चकाचौंध ने राजनीति में युवाओं की सकारात्मक सक्रियता को निर्मूल कर दिया हैं। इसीलिए उनको राष्ट्रभक्ति के लिए राजनीति का पाठ पढ़ने में कोई रुचि नही होती। क्या ऐसे में भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को अपने राष्ट्र की व्यवस्था को बनाये रखने व सामाजिक दायित्व निभाने के लिये कोई आउटसोर्सिंग का सहारा लेना पड़ेगा? अतः राष्ट्रवादी नेताओं को अपने छोटे छोटे समर्पित कार्यकताओं व स्वयं सेवकों का तिरस्कार नही करना चाहिये बल्कि उनका सहयोग करके राष्ट्रवादी कार्यो को प्रोत्साहित करें अन्यथा वर्तमान कुटिल राजनीतिज्ञ अनेक छदम धर्मनिरपेक्षवादी, तथाकथित बुद्धिजीवी व मानवतावादी, देशद्रोहियों एवं विदेशी शक्तियों के साथ मिलकर सत्ता परिवर्तन में सफल हो सकते हैं।

राजनीति

क्या कारण है कि देश के टुकड़े टुकड़े करके बर्बादी तक जंग लड़ने वाले देशद्रोही आज नेता बन रहें हैं? अनेक देशद्रोही शक्तियां राष्ट्रवाद की भावना और उसकी लहर को नष्ट करने के लिए हिंदुओं को जातिगत आधार पर बांटने के साथ साथ जिहादियों को भी बढ़ावा दे रही हैं। परिणामस्वरुप राष्ट्रवादी व उनके समर्थक विभिन्न प्रकार से सुनियोजित षडयंत्रों के कारण भविष्य में अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने में सफल हो पाएंगे या नही, अब यह संशय होने लगा है। आज देश में कुटिल राजनेता बात बात पर और बार बार राष्ट्रवाद पर प्रहार करने के लिए अनुचित अवसरों का सहारा ले कर भोले भाले देशवासियों को भ्रमित करने के मार्ग ढूंढने में लगे हुए हैं। सत्ताहीनता की पीड़ा ने पूर्व सत्ताधारियों को कोई सकारात्मक दृष्टिकोण का पाठ नही पढ़ाया और न ही उनके स्वभाव में कोई विशेष परिवर्तन के लक्षण दिखने को मिलते हैं। उनके स्वभावों में परिवर्तन कैसे हो यह भी विचार करना होगा? क्योंकि वे दशकों से सत्ता सुख के आंनन्द व अहंकार की मानसिकता से बाहर नही आना चाहते? तभी तो उनका एकमात्र लक्ष्य यह है कि देश में राष्ट्रवादियों के विरुद्ध निरंतर नकारात्मक वातावरण बना रहें और भविष्य में वे पुनः राजसत्ता पा सकें। क्या विपक्ष में बैठने वाले राजनेताओं को अपनी विरोधी मानसिकता के कारण राष्ट्रीय हित को तिलांजलि दे देनी चाहिये? यह कैसी अज्ञानपूर्ण महत्वाकांक्षा है जो किसी अन्य को राज सत्ता में देखकर वैमनस्यपूर्ण व्यवहार के लिए प्रेरित करती है। अगर ऐसे नकारात्मक विचारों की वास्तविकता देशवासियों को प्रभावित करेगी तो यह अत्यंत दुखद होगा। जिस प्रकार जीवन में बईमानी व चोरी के अनेक मार्ग होते हैं परंतु ईमानदारी का सत्य ही केवल एक मार्ग हैं। इसीलिए राष्ट्रभक्ति विभिन्न मार्गो पर चलने की अनुमति नही देती। उसमें राजनीति हो पर राष्ट्रनीति ही सर्वोच्च होती हैं। बुद्धिजीवियों में अनेक किन्तु – परंतु हो सकते हैं लेकिन राष्ट्र सर्वोपरि के प्रति कोई समझौता अवनति के मार्ग पर ही जायेगा।

राष्ट्रीय परिप्रेक्ष में आज अनेक प्रश्न उठते हैं जिनका सार केवल यही है कि क्या महात्मा विदुर व आचार्य चाणक्य के समान कोई महान निस्वार्थ व्यक्तित्व राजनीति के शीर्ष पर उभरेगा, जो देश में सक्षम व कुशल नेतृत्व के अभाव को दूर करके, भारत की महान संस्कृति व सभ्यता की श्रेष्ठता को स्थापित कर सकें? क्या धरती पर मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम व योगीराज श्रीकृष्ण के समान आदर्श भगवान रुपी युग पुरुष पुनः अवतरित होंगे ? क्योंकि आज विडंबना यह है कि प्रायः सामान्य समाज विभिन्न राष्ट्रीय व सामाजिक समस्याओं व स्वयं अपने आप के लिए भी जीवन में संघर्षो से जूझने के स्थान पर उदासीन व निष्क्रिय होकर उसको भगवान भरोसे छोड़ने में ही संतोष पाता है।

अविश्वसनीय-विघटन की नयी फाल्टलाईन के लिए हम जिम्मेदार

✍ हरिकृष्ण निगम

वैश्विक इस्लाम के स्वयंभू संरक्षक एवं कट्टर सुन्नी, वहाबी, सलाफी या देवबन्दी, शरीयत के विश्व में अग्रणी व्याख्यात एवं पोषक आज सऊदी अरब व पाकिस्तान की अगुवाई में अगले वर्ष के आने के पहले शियाओं के नरसंहार में विक्षिप्त होकर जुट गए है। चाहे काहिर हो या जर्मनी या न्यूयार्क अथवा सऊदी अरब के शहर या फिलिस्तान बस्तियों के अन्दरूनी हिस्से च सीरिया विस्फोटकों या गोलीबारी में मृत व हत्याओं की संख्या कहा जाता है कि पिछले दो विश्व युद्धों में जितनी नहीं हुई थी उससे अधिक अब तक आई. सी. आई. एस. द्वारा पार कर दी गई है। इसके लिए भारत के जिहादी व अतिरेकी इस्लाम के हिमायती जिस द्रुत व संगठित गति से काम कर रहे हैं वस्तुतः एक अविश्वसनीय विडम्बना है। राजनेताओं व अंग्रेजी के कुछ वरिष्ठ पत्रकारों के विक्षिप्तता भरे भड़काऊ वक्तव्य जो मानवाधिकार व लोकतांत्रिक अधिकारों के नाम पर निरन्तर छप रहे हैं वह एक शोचनीय विषय है। यह सर्वविदित है कि चीन और पाकिस्तान भारत के राष्ट्रद्रोह एक छोटे वर्ग को तब तक उकसाता रहेगा जब तक भारत के राजनीतिक नेतृत्व के धैर्य का बाँध न टूट जाए। चाहे मनमोहन सिंह अथवा सोनिया गाँधी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सुरक्षा संगठन द्वारा कश्मीर सम्बंधी वार्ताकारों की कई कमेटियों के अधकचरे खतरनाक सुझावों की श्रृंखला हो या विवादित इतिहास रोमिला थापर हो आज भी वे वही कुटिल दशक पहले की भूमिका अपने लेखन द्वारा निभाने में जुटी है। स्वयं संसद में एक बार वी. के सिंह ने कहा था कि राहुल गाँधी पिछले वर्ष ५७ दिनों से सत्र में अनुपस्थित थे और हाल में ही तीन तलाक जैसे अधिनियम के लोकसभा में एक स्वर से पारित होने के समय में भी वे और सोनिया गाँधी दिल्ली से बहर छुट्टियाँ मनाने में व्यस्त थे। इतिहास को तोड़ने मरोड़ने में आज फिर इरफान हबीब, ए. जी. नूरानी, दलीप पाडगाँवकर एवं रोमिला थापर नई ऊर्जा से अपना पुराना राग दोहरा रहे हैं। अपनी स्वघोषित वामपंथी व मार्क्सवादी इतिहास कार की छवि पर गर्वान्वित होने वाली, यद्यपि अब वे मात्र उदारवादी बुद्धिजीवी की पहचान ओढ़ना अधिक पसन्द करती हैं, वयोवृद्ध ८८ वर्षीया रोमिला थापर अपने हिन्दू–विद्वेषी –सद्यः प्रकाशित ग्रंथ ऑन नेशनलिज्म के कारण फिर विवादों के झंझावत से घिर गई है। वस्तुतः उनके किसी भी ग्रंथ को इतिहास की कृति कहना भी विरोधाभासी है क्योंकि एक इतिहासविद् के अनुशासन के परे वे राजनीति प्रेरित आज के चश्मों से ही सैकड़ों–हजारों वर्ष पूर्व के देश इतिवृत्त पर सर्वत्र सतही टिप्पणियां करती दीखती है। हाल की प्रकाशित अपनी कृति में वे कहतीं हैं कि राष्ट्रीयता की भावना का प्रदर्शन मात्र झण्डे फहराने व भारत माता की जय के नारे लगाने से नहीं किया जा सकता है। जिस तरह सरकारी सुविधाओं व अपार धन राशि से पोषित सेकुलरवादी स्वयम्भू बुद्धिजीवियों का जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय व अनेक केन्द्रीय स्तर के विश्वविद्यालय अराष्ट्रीय तत्वों के अभयारण्य बन चुके हैं वह सर्वविदित है। विभाजनकारी आभिजात्य वामपंथियों के चाटुकर मधुमक्खियों के छत्ते की उन्हें रानी –मक्खी की संज्ञा देते हुए उनके चाहे पारिवारिक या शैक्षणिक नेटवर्क हों वे हिन्दू विद्वेष के जादुई चुम्बक से सबको एक जुट रखकर संरक्षण देने के लिए अरसे से कुख्यत रही हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत में कांग्रेस और वामपंथियों की सत्ता हथियाने की हर कोशिश में रोमिला थापर व उनके गिरोह के चाहे इरफान हबीब हों या दर्जनों छोटे बड़े पत्रकार लेखक उन्होंने हिन्दू विद्वेष व उनके विरुद्ध विषवमन को सदैव अपना अस्त्र बनाया था। अपने तीन निबंधों के संग्रह की राष्ट्रवाद सम्बन्धी इस पुस्तक में न्यायविद ए. जी. नूरानी एवं सदानन्द मेनन के हठधर्मी उन विचारों को रेखांकित करती दीखती आज इस देश में सामाज्यवादी राष्ट्रवाद को ही मूलाधार मानने की कोशिश हो रही है जो वस्तुतः धार्मिक व साम्प्रदायिक प्रकृति का रहा था। इतिहास–लेखन के विश्व भर में स्वीकृत मानदण्डों से परे रोमिल थापर ने एक समय अनेक कांग्रेसी राष्ट्रभक्त नेताओं व डा० करण सिंह जैसे केबिनेट मंत्रियों को भी स्वयं तत्कालीन प्रधान मंत्रियों जैसे इन्दिरा गांधी आदि से उनके विरुद्ध शिकायत की थी यह भुलाया नहीं जा सकता है। क्योंकि साम्यवादी सदैव यह समझते थे कि बिना कांग्रेस के सहयोग के वे सत्ता हस्तगत नहीं कर सकते है। प्रो. आसिफ ए. ए. फैजी, रिचर्ड साइमाण्ड्स, एम. एन. रॉय, सज्जाद जहीर, पी. सी. जोशी, सैयद शहाबुद्दीन के विचारों के साथ साथ लगता है रोमिला थापर अन्तिम आटोमन सम्राट और अखिरी सत्ताधारी खलीफा तुर्की के सुल्तान महमूद छठें व इस्लाम के अध्येता सर थामस अर्नोल्ड जो १६ वीं शताब्दी में एम. ए. जी. कालेज अलीगढ़ में इतिहास के व्याख्याता थे, उनके भी विचारों का आगे बढ़ाने में जुटी रही है। देश के हिन्दुओं का मनोबल तोड़ने में रोमिल थापर का मुगलिया अन्दाज कांग्रेस व साम्यवादी दलों से भिन्न नहीं था और ४० के दशक में वे जामिया मिलिया के प्रो. एम. मुजीब के विचारों से भी प्रभावित थी। हमारे विश्वासों पर नए कुतर्को की नाकेबन्दी व मूर्ति विध्वसंकों के मन्तव्यों को तर्क का जामा पहनाने का काम रोमिल थापर ने सारे जीवन में अत्यन्त सतर्कता से निभाया है।

मिजोरम से मोदी ने शुरु किया 'मिशन पूर्वोत्तर'

आईजोल १६ दिसम्बर। आज मिजोरम में मोदी ने एक पन बिजली परियोजना का उदघाटन किया। एक मैदान में रैली में कहा है कि शीघ्र ही पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानियों को रेल मार्ग से जोड़ दिया जाएगा। मिजोरम में नवम्बर में विधान सभा के चुनाव होने हैं।

प्रतिक्रिया

१. इस समय मिजोरम में ६० प्रतिशत ईसाई हैं। पादरियों ने इन्हें गोभक्षक बना दिया है। गोमांस को सवोत्तम कहा जाता है।
२. जिलों के प्रशासनों पर ईसाई पादरियों–उग्रवादियों का जर्बदस्त प्रभाव व दबाव है।
३. इनके अत्याचारों और दुर्व्यवहारों से तंग होकर १६६७ में १० प्रतिशत रियांग हिन्दू आदिवासियों को मिजोरम से जान बचाकर भागना पड़ा।
४. २० वर्षों से ये शरणार्थियों के रूप में त्रिपुरा के शिविरों में रह रहे हैं।
५. मोदी को रैली में कहना चाहिए था कि गोदूध तो उत्तम है लेकिन गोमांस हानिकारक है अतः गोमांस का सेवन कम किया जाए।
६. मोदी को यह भी बोलना चाहिए था कि मिजोरम को रेल मार्ग से तब जोड़ा जाएगा जब रियांगों का पुनर्वास हो जाए।
७. अब मोदी गांधीवादी भाषा बोलने लगे हैं। यह हमारा दुर्भाग्य है।

आई० डी० गुलाटी बुलन्दशहर

मुस्कराना सीखो

गिराने से पहले उठाना सीखो।
मुहब्बत से गले लगाना सीखो।
मुसीबत में तो पता लगेगा ही,
उसको पहले आजमाना सीखो।
दर्द किसी का महसूस करो भी,
दुख में भी आंसू बहाना सीखो।
रूठे अगर प्यार करने वाला,
दिल से उसको मनाना सीखो।
वो आए जाएं सुनते ही बस,
तुम ऐसा कोई बहाना सीखो।
गमों का पहाड़ भी आए तो,
जबरदस्त तुम मुस्कराना सीखो।
काले दाग बुरे वकत के जो,
हिमंत से उनको मिटाना सीखो।

हरदीप बिरदी

पुणे का शनिवारवाड़ा

✍ रमेश जि. नेवसे

(शेष पिछले अंक का)

बाजीराव के इस बर्ताव से शत्रु जागने लगे। मराठा सरदार सत्ता, संपत्ति, इनाम के लिए चालें चलने लगे थे। बाजीराव पेशवे अपने को राजपाट अच्छे तरीके से करने नहीं देगा। वो जिंदगी भर मनमानी करते रहेगा और उसकी वजह से ही मराठा राज्य नष्ट प्रत होगा। इस विचार से नाना बीमार पड़ गया। उसके पीछे रोने वाला कोई नहीं था। संतान के लिए उसने कितनी ही शादियाँ की मगर वो बाप नहीं बन सका। कैद से छूटने के बाद नाना ज्यादा दिन जिंदा नहीं रहे। नाना के मौत के कारण नामी सरदारों को जितना दुःख हुआ, उतना ही मराठा आबादी को हुआ। लेकिन अंग्रेज खुशी से नाचने लगे। हिंदुस्थान पर उनका कब्जा हो गया था। बस मराठा राज्य ही उनके कब्जे आना बाकी था। लेकिन बुद्धिमान नाना फडणवीस के कारण अंग्रेजों का ख्वाब दूर-दूर जाता था। लेकिन नाना के मौत से उन्होंने चैन की साँस की। बाजीराव को पेशवे पद का साथ और साथ-साथ में छत्रपती को पेशवे से अलग करके मराठा राज्य हासिल करना उनके लिए अब कुछ साल की बात थी।

शिंदे तथा होलकर इन दो शूर, वीरता की पूजा करने वाले घरानों में पुणे के राजकारण में वर्चस्व प्राप्त करने की दौड़ शुरू हुई। नये सिरे से राजकारण शुरू हुआ। दंगे फसाद होने लगे। दूसरे बाजीराव के दत्तकभाई अमृतराव पेशवा नामक था। उसे राघोबादादा ने बाजीराव के जन्म के पहले ही दत्तक लिया था। राघोबादादा के दो छोटे पुत्र बचपन में ही मर चुके थे। अमृतराव दत्तक सही, लेकिन अभी वो राघोबादादा के पुत्र बचपन में ही बने थे। उनके मन में भी अब सत्ता और संपत्ति की लालच पैदा हुई थी। अपना अधिकार जमाने हेतु उसने विठोजी होलकर को अपने गुट में शामिल किया। उस वक्त पेशवे के नामचीन सरदार, सगे संबंधी, राजकाज में भाग लेने वाली बड़ी-बड़ी हस्तियाँ अपने स्वार्थ के और मतलब के अनुसार पेशवे बाजीराव का हुक्म मानने लगे थे। पूरे राज्य में अंधाधुंध परिस्थिति पैदा हुई। वे लोग पेशवा के खिलाफ भी जाते तो पेशवा उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते थे।

विठोजी होलकर ने संपत्ति, सत्ता की लालसा से और अमृतराव के भरोसे में आकर बाजीराव पेशवे का आदेश ठुकराया। उसका नतीजा ये हुआ ये कि, पेशवा ने होलकर के खिलाफ बगावत के कारण युद्ध छेड़ा। सरदार, सेनापति, गोखले और उनके साथ सरदार पानसे, पुरंदरे जैसे नामी वीर सरदारों ने विठोजी होलकर की पराजय की। विठोजी पकड़ा गया। कैद करके उसे शनिवारवाडे में लाया गया। भरे दरबार में दूसरे बाजीराव ने अनेक सरदारों के सामने विठोजी

होलकर की बेंत से पिटाई की। गिन के उसे २०० बेंत मारे गये, जिसके कारण विठोजी खून बहने के कारण मृतप्राय हो गया था। लेकिन सूडबुद्धी के पेशवे का दिल ठंडा नहीं हुआ था। उन्होंने शनिवारवाडे के सामने वाले खुले मैदान में हाथी के पाँवो तले उसे कुचलाया। दो दिन तक विठोजी होलकर जैसे नामी सरदार का शव शनिवारवाडे के सामने ही पड़ा था। विठोजी होलकर की दर्दनाक मौत के कारण सरदार सुन्न रह गये। लेकिन इस घटना के कारण पेशवे बाजीराव ने होलकर घराने से शत्रुत्व मोल लिया।

अपने भाई की पिटाई और दर्दनाक मौत की खबर सुनते ही यशवंत होलकर मालवा से पुणे की ओर निकले थे। अमृतराव ने उन्हें न्योता दिया था। यशवंत पुणे आये। मालवा से निकलने के कारण ही भाई के मौत का बदला लेना था। बाजीराव पेशवे के पुणे में आते ही उनके मन में बदले की भावना भड़क उठी। उसने पुणे की नाकेबंदी कर दी। और पैसा वसूल कर शुरू किया। २५ अक्टूबर १८०२ इस्वी में हडपसर के मैदान में यशवंतराय ने पेशवे के फौज को पराजित किया। और इस कारण अपनी जान बचाना बाजीराव ने उचित समझकर पुणे का शनिवारवाडा छोड़कर वो अपने सगे-संबंधियों के साथ सिंहगढ़ की तरफ भाग निकले।

पेशवा भाग निकलने के कारण यशवंतराव ने दिवाली के लक्ष्मी पूजन के दिन पुणे पर हमला किया। बदले की कारण वो अंधा हो गया था। अनेक मान्यवर हस्तियों से पैसा उगलवाने के लिए मारपीट की गई। अनेक सरदार, साहूकार, अमीरों के महल, वाडे बस्तियाँ गिरवाई गईं। कितने लोगों को उनके बाल बच्चे, बीबियों के सामने फाँसी पर लटकाया गया। किसी को गर्म तोप पर बाँधकर जिंदा भूना गया। पुणे की जनता से पैसा प्राप्त करने हेतु अनेक अत्याचार शुरू हुए थे। यशवंतराव ने शनिवारवाडे को भी नहीं छोड़ा। शनिवारवाडे से उसने करोड़ों की लूट की, लेकिन राजगद्दी को अपमानित नहीं किया।

अपनी जान बचाने हेतु शनिवारवाडे से खजिना और निजी संपत्ति लेकर भाग निकला। बाजीराव कई दिन सिंहगड किले पर रुका। लेकिन उसे अपने साथीदारों और सैन्यबल पर विश्वास नहीं रहा। उसी कारण वह कोकण चला गया। वहाँ से वो समुद्री जंजिरा सुवर्णदुर्ग जा रुका। उसके साथ जो सगे-संबंधी, रिश्तेदार, साहूकार थे वे कोकण में गाँव-गाँव में फैले। जिस शनिवारवाडे से प्रतापी बाजीराव ने सारे हिंदुस्थान में मराठों की वीरता का डंका बजाया था। भगवने निशाण का गौरव बढ़ाया था। उसी 'भट' घराणे के द्वितीय बाजीराव पेशवा को अपनी जान एक सरदार के हाथ से बचाने के लिए शनिवारवाडे से भाग जाना पड़ा था।

भगोड़े बाजीराव ने अंग्रेजों की तरफ दोस्ती के लिए हाथ बढ़ाया। प्रथम बाजीराव के भाई चिमाजी आप्पा के पराक्रम से और चालीस हजार मराठों ने अपने जान की बाजी लगाकर पोर्तुगेजों से वसई किला और ३४० गाँवों पर कब्जा करके पोर्तुगीजो को साष्टी याने ठाणे से बाहर कर दिया था। वही किला और कुछ इलाका अंग्रेजों को सहायता के बदले देकर भगोड़े बाजीराव ने पूरे पेशवाई की सुरक्षा का भार अंग्रेजों को सौंपा। इस तह को 'वसई का तह' नाम से जाना जाता है। इस तह के कारण ही मराठा राज्य अंग्रेजों के हाथों में जल्द आ गया।

यशवंतराव ने पुणे में अनेक महल लूटे। कई महलों को आग लगाकर, उनकी राख कर दी। कितने महल मलबे में ढल गये। पुणे की नामी व्यक्तियों की सारी संपत्ति लूटी। राघोबादादा के दत्तक पुत्र अमृतराव ने ही यशवंतराव का साथ दिया और बहुत सारा धन जमाया। रक्षक ही भक्षक बने। पुणे की जनता असह्य, बेसहारा बन गयी। खुद पेशवे ही चोर बन गये। अंग्रेजों ने बाजीराव के साथ तह होने के बाद यशवंतराव का संकट दूर करने के लिए तैयारियाँ कीं। इस खबर से लुटी हुई संपत्ति के साथ यशवंतराव ने पुणे से विदा ली और पुणे के लोगों ने चैन की साँस ली। और सब शांत होने के बाद चैन से पुणे के शनिवारवाडे में राजपाट संभालने के हेतु १३ मई १८०३ को भगोड़ा बाजीराव शनिवारवाडे में वापस लौट आये।

पुणे के शनिवारवाडे में दूसरा बाजीराव विलासी जीवन जी रहा था। औरतों का वह दीवाना था। शनिवारवाडे में उसके महल में नामचीन लोगों की औरतें उसे खुश करने हेतु आया जाया करती थीं। औरतों के माध्यम से लोग अपना काम करा लेते और अपना सीधा कर रहे थे। राजनीति में बाजीराव कच्चा खिलाड़ी था। पर उसका दीवाण त्रिंबकजी ठेंगळे एक होशियार, बुद्धिमान, होनहार और पराक्रमी वीर था। वह तेज तलवार बहादुर था। उसकी शमशेर उसकी कलम से भी तेज थी। ही अंग्रेजों के इरादों को उसने पहचाना था। नाना की तरह ही त्रिंबकजी अंग्रेजों के मराठा राज्य हासिल करने के काम में रूकावट था। वह इस काम में रोड़ा बन गया था। त्रिंबकजी को जाल में फँसाने की चाल चालाक रेसिडेंट एलफिस्टन ने सोची थी।

गुजरात मराठा राज्य का हिस्सा था। जिसकी बागडोर मराठों के नामी सरदार गायकवाड संभालते थे। गायकवाड ने पिछले कहीं साल का राज्य का हिसाब पेशवे को नहीं दिया था। साथ में पेशवे को जो लगान देनी थी, उसमें भी हेराफेरी कर रखी थी। इस जालसाजी का निपटारा करने के लिए गायकवाड ने अपने नाना फडणवीस जैसे तेज दिमाग वाले दिवाण गंगाधार शास्त्री पटवर्धन को पुणे भेज दिया था। कई दिन के बाद काम का बोझ हलका होने के बाद धर्मप्रेमी गंगाधार शास्त्री के मन में पंढरपूर तीर्थक्षेत्र जाने की इच्छा हुई और त्रिंबकजी पेशवे के हुक्म से पूरा बंदोबस्त करके शास्त्री को पंढरपूर भेजा। एक दिन सुबह-सुबह परिक्रमा मार्ग पर दर्शन के बाद शास्त्रीजी के ऊपर किसी ने समशेर से घावा बोल दिया। हत्यारा कौन था ये अंधेरे में किस को दिखाई नहीं दिया था। आखिर तक हत्यारों को पकड़ने में कामयाबी नहीं मिली।

अंग्रेजों ने इस कत्ल का संबंध त्रिंबजी डेंगळे से जोड़ दिया। उसकी जिम्मेवारी पेशवा के दीवाण होने के कारण थी। इसलिए ये मौके का फायदा अंग्रेजों ने उठाया। एक पत्थर में दो पंछी मारने जैसा ही ये कार्य था। अंग्रेज रेसिडेंट एलफिस्टन ने बाजीराव पेशवे को खत लिखकर अपराधी के रूप में त्रिंबजी की माँग की। क्योंकि गायकवाड ने अंग्रेजों के साथ फौज और गुजरात राज्य का संरक्षण के लिए समझौता किया था। जिसे तैनाती याने खड़ी फौज के नाम से जाना जाता था।

बाजीराव को पूरा यकीन था कि यह काम त्रिंबकजी का नहीं है। इसके पीछे एलफिस्टन की

शेष पृष्ठ 11 पर

देश विभाजन का खूनी इतिहास

(१९४६–४७ की क्रूरतम घटनाओं का संकलन)

(पिछले अंक का शेष)

सच्चा सौदा से आने वाली एक श[illegible]ी ट्रेन से कुछ यात्री पा[illegible]न के लिए बाहर निकले, उनमें से तेरह को गोली मार दी गई। एक हिन्दू यात्री को चलती गाड़ी में धक्का देकर चढ़ाया गया। वह डिब्बे में स्वयं को बलूचों से घिरा पाया। उसके पास जो कुछ भी था लूट लिया गया। उसके कपड़े उतार लिए गए। वह बिल्कुल नंग–धडंग हो गया। उसके बाद बलूची उसे ठोकर मारने और गला दबाने लगे। धीमा उत्पीड़न का यह क्रम तब तक चलता रहा जब तक कि वह बेहोश नहीं हो गया। तब उसके संज्ञाहीन शरीर को निर्जीव समझकर गाड़ी से बाहर फेंक दिया गया, पर वही जीवन से जूझ कर भयकंपित करने वाली कहानी बताने के लिए जीवित बच गया।

पूर्वी पंजाब सरकार के जनसंपर्क अधिकारी ने लिखा, "आप लाहौर में एक भी हिन्दू या सिख को शहर में कहीं भी या किसी भी असैनिक ठिकानों पर इधर–उधर घूमते नहीं पाएँगे। कुछ स्थानों में लोग छोटे कमरों में सैकड़ों की संख्या में वध किए जाने से बचने के लिए रह रहे हैं।" अनेक प्रमुख सरकारी अधिकारी चुन–चुन कर निर्लज्जापूर्वक कत्ल कर दिए गए। डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर मि. एस.पी. आर. साहनी अगस्त में छुट्टी पर डलहौजी गए थे। वे ११ सितम्बर को लाहौर वापस आए। उनके मुस्लिम साथियों ने उनको तुरंत लाहौर से चले जाने का सुझाव दिया। वे १२ सितम्बर को पदभार सौंपने अपने कार्यालय गए। कार्यालय में ही कुछ मुसलमानों द्वारा उन पर आक्रमण किया गया। वे उन्हें खींच कर बाहर ले गए, एक खंभे से बाँधा और शरीर को पैशाचिक तरीके से चीर कर टुकड़ों में काट डाला। यह कार्रवाई समझ से परे थी।

समीक्षा : समझ से परे कोई चीज तब होती है जब उसके होने के कारणों की जानकारी नहीं होती। तिनाज कुछ हुआ, वे कोई अपरिचित घटनाएँ नहीं थीं। इस्लाम का इतिहास ही खून से सना है। लेकिन गैर मुस्लिम विशेष रूप से हिन्दू आत्मकेन्द्रित और स्वार्थी जीवन शैली के कारण जो आया उसे भुगत कर पुनः उसी आत्मनिष्ठ शैली में जीवन गुजारने लगते हैं। अहिंसा की मूल भावना की समझ खोकर कायरता और स्वार्थ की पशुवृत्ति तक सिमट जाते हैं और सामाजिक उत्तरदायित्व रहित बन जाते हैं। बीती घटनाओं का अध्ययन कर सामाजिक रूप से विचार कर निदान का उपाय तलाशने का कोई प्रयास नहीं करता। वर्तमान हिन्दू समाज का प्रत्येक वर्ग जिस प्रकार की उदासीनता का शिकार है, वह भविष्य में उसके दर्दनाक अंत का स्पष्ट संकेत है, जो मुस्लिम जनसंख्या के और बढ़ते ही दिखने लगेगा। कुछ–कुछ तो अभी ही दिख रहा है।

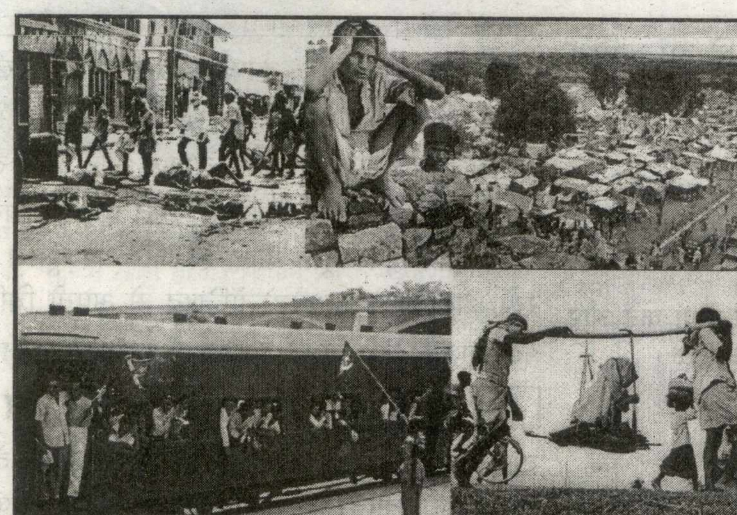

मि. वीर भान, उपनिदेशक उद्योग ने भारत में रहने की इच्छा व्यक्त की थी और ६ अगस्त को लाहौर छोड़ने की व्यवस्था भी कर ली। फिर भी उन्हें अपनी यात्रा स्थगित करनी पड़ी क्योंकि अपने विभाग के विभाजन से संबंधित कुछ कार्य उन्हें सौंप दिए गए। जब ११ अगस्त को गड़बड़ी शुरू हुई, उनकी सुरक्षा के लिए दस सिपाहियों का एक दल उनके आवास पर नियुक्त कर दिया गया। १४ अगस्त को लाहौर की स्थिति बहुत बिगड़ गई। मि. वीर भान ने अपना परिवार शिमला भेजने का निश्चय किया। तद्नुसार अपनी पत्नी को सामान बाँधने को कहकर स्वयं ट्रक की व्यवस्था हेतु कार्यालय गए, जो उनके ही जिम्मे सौंपा गया था। घर छोड़ने से पहले उन्होंने अपने आदेशपाल को सामान लादने के लिए कुछ कुली लाने को कहा। ऐसा लगता है कि मुसलमान चपरासी ने चार कुलियों को बुलाया और उन्हें घर में कहीं छिपा दिया। मि. वीर भान मिलिटरी ट्रक से वापस आकर अपने चपरासी को ट्रक में सामान लादने को कहा और स्वयं ड्राइंग रूम में खड़े–खड़े एक चिट्ठी पढ़ने लगे। तभी अचानक चार लोगों ने उन पर आक्रमण किया। वे उनको छुरा मारने लगे। उनकी चिल्लाहट सुनकर पत्नी दौड़कर आई जिसे छुरे से गोद डाला गया। मि. वीर भान लड़खड़ाते हुए कमरे से बाहर आए और बरामदे में आते–आते दम तोड़ दिया। उनकी पुत्री अपने कपड़े बदल रही थी और जब बाहर आई अपने माँ–बाप को खून में सना देखा, जबकि मुसलमान चपरासी और चारों हत्यारे घर से सामान ढोकर ले जा रहे थे। पुलिस रक्षकों ने उसके ऊपर बंदूक तान दिया और अपने पिता की हत्या का दोषी कहा। इन पुलिसवालों ने मि. और मिसेज वीर भान के शरीर की तलाशी ली और हाथ घड़ी और रुपयों के नोट निकाल लिए जबकि निस्सहाय बेचारी लड़की खड़ी–खड़ी क्रूर ड्रामा देख रही थी। अत्यंत कठिनता से ही श्रीमती वीर भान को चिकित्सा हेतु अस्पताल ले जाने दिया गया।

पंजाब विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार श्री मदन गोपाल सिंह को अगस्त के अंत में विश्वविद्यालय के गैर मुस्लिम कर्मियों को वहाँ से निकालने के लिए लाहौर जाने के लिए कहा गया, उनको सुरक्षा का आश्वासन दिया गया कि उन्हें सशस्त्र रक्षक दल और ट्रक की व्यवस्था की जाएगी। तदनुसार वे २४ अगस्त को वायुयान से लाहौर गए। कोई रक्षक दल नहीं दिया गया और जब उन्होंने पश्चिमी पंजाब के राज्यपाल से भेंट की, उन्हें कहा गया कि २ सितम्बर को ट्रक की व्यवस्था होगी। १ सितम्बर की सुबह विश्वविद्यालय का एक चपरासी श्री सिंह के घर गया और कहा कि नये रजिस्ट्रार मि. वशीर उनसे अपने कार्यालय में मिलना चाहते हैं। मि. सिंह ६ बजे कार्यालय गए पर मि. वशीर वहाँ उपस्थित नहीं थे। उनको कहा गया कि मि. वशीर उपकुलपति से मिलने गए हैं जिनका कार्यालय भवन के प्रथम तल्ले पर था। मि. सिंह ऊपर जाने के लिए कमरे से बाहर निकले। बरामदे में उन पर तीन आदमियों द्वारा हमला किया गया। उनके शरीर पर नौ वार करने के बाद वे भाग गए। आवाज सुनकर सहायता के लिए कोई नहीं आया। मि. सिंह अभी जीवित थे, उन्हें कार में चढ़ा कर अस्पताल ले जाया गया। कार को अत्यंत धीमी गति से चलाया जा रहा था और दो माइल की दूरी पैंतालिस मिनट में तय की गई। जब तक कार अस्पताल पहुँची उनका जीवन बुझ चुका था।

गैर मुसलमानों की सामूहिक हत्या, जो मंदिर मार्ग के गुरुद्वारा हरगोविंद में शरण लिए हुए थे, अति बर्बरता की अन्य घटना थी। क़रीब साढ़े तीन सौ गैर मुसलमान गुरुद्वारा में शरण लिए हुए थे, जिसकी सुरक्षा हिन्दू सैनिक के एक इकाई द्वारा की जा रही थी। १४ अगस्त को हिन्दू रक्षकों को हटा कर मुस्लिम रक्षकों को ला दिया गया। उसी शाम गुरुद्वारा के अंदर आग के कई गोले फेंके गए। जब आग से बचने के लिए वे बाहर आए मुस्लिम रक्षकों द्वारा उन्हें गोली मारी गई या मुस्लिम नेशनल गार्ड्स द्वारा छुरा मारा गया। इस तरीके से साढ़े तीन सौ लोगों में से प्रत्येक की हत्यार कर दी गई। आक्रमण की योजना सावधानीपूर्वक तैयार की गई थी। इसकी जानकारी नेशनल गार्ड्स के एक सदस्य ने अपने हिन्दू मित्र को घटना के एक दिन पहले ही दे दी थी। यह हिन्दू मित्र अस्थायी रूप से इस्लाम में धर्मान्तरित कर दिया गया था। उसने बाद में आक्रमण की कहानी का वर्णन किया। अधिकतर शवों को मिलिटरी गाड़ियों में लाद कर ले जाया गया और सिर्फ कुछ को गुरुद्वारा के सामने पड़ा हुआ रहने दिया गया।

१४ अगस्त को मॉडल टाउन पर आक्रमण किया गया और नेशनल गार्ड्स ने बहुत सारे गैर मुस्लिमों को गोली मारी जो कैम्प में शरण लिए हुए थे। सौभाग्य से डोगरा सैनिकों के पहुँच जाने से कैम्प में रहने वाले शरणार्थियों का थोक में कत्लेआम नहीं हो सका। २८ अगस्त को एक पेंट और वार्निश की फैक्टरी पर हमला हुआ और नेशनल गार्ड्स मशीन, कच्चा माल, उपस्कर और अन्य सामान बैलगाड़ी पर लाद कर ले गए। इसे पूरा करने में उन्हें एक सप्ताह लगा। बैलगाड़ियों को इस उद्देश्य से चार सौ खेप लगाने पड़े, पर किसी पुलिस वाले या मिलिटरी वाले ने छेड़छाड़ नहीं की। गैर मुसलमानों को ढोने वाली अकेली लारियों को बार–बार आक्रमण का शिकार बनाया गया। एक अवसर पर पुलिस ने लॉरी को रोकने के लिए उसके टायर पर गोली मारी। ड्राइवर और यात्रियों को उतारकर उन्हें कतार में खड़ा कराया गया, उसके बाद पुलिस वालों ने उन्हें एक–एक कर गोली मार दी।

छावनी में लूट और आगजनी १६ अगस्त को शुरू हुई। फायर ब्रिगेड बुलाया गया पर मुसलमानों ने उसे काम नहीं करने दिया। छावनी के सभी हिस्सों में २१ अगस्त और १ सितम्बर के बीच गड़बड़ी पूरी तरह फैल गई। इस अवधि में सारा छावनी क्षेत्र लूट लिया गया और गैर मुसलमानों के घरों को मुसलमानों द्वारा हथिया लिया गया। हजारों गैर मुसलमानों ने शहर छोड़ कर डी.ए.वी. कॉलेज में स्थापित शिविर में आश्रय लिया। गड़बड़ी शुरू होने के पहले तक शहर में रहने वाले तीन लाख गैर मुसलमान १६ अगस्त तक सिर्फ दस हजार रह गये थे और अगस्त के अंत तक नाम मात्र के ही हिन्दू और सिख अपने घरों में थे और वे भी

शेष पृष्ठ 11 पर

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,
श्री नरेन्द्र मोदी जी,
माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार
साउथ ब्लॉक, नई दिल्ली-११००११

विषय : महबूबा मुफ्ती के बेलगाम बोल।

महोदय,

कृपया जम्मू–कश्मीर की मुख्यमंत्री सुश्री महबूबा मुफ्ती के बेलगाम वक्तव्यों की ओर ध्यान आकृष्ट करने की कृपा करेंः

१. २८ जुलाई, २०१७ को नई दिल्ली में महबूबा मुफ्ती ने चेतावनी दी कि अगर संविधान के अनुच्छेद ३७० और ३५४ से छेड़छाड़ की गई तो कश्मीर में तिरंगा उठाने वाला कोई नहीं मिलेगा।

२. १७ मार्च, २०१७ को महबूबा मुफ्ती ने कहा था कि राज्य के कुछ हिस्सों से अफस्पा कानून को हटा दिया जाए। उन दिनों सुरक्षा बलों पर पत्थरबाजी हो रही थी।

३. १८ मार्च, २०१७ को महबूबा मुफ्ती ने मुम्बई में कहा कि भारत को चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे से जुड़ जाना चाहिए।

उपर्युक्त विषय में हमारा कहना है किः

१. ऐसा क्या है कि महबूबा कुछ भी बयान (खतरनाक) देने के बावजूद पद पर काबिज हैं?

२. उनकी सत्ता में टेक बनी भाजपा की कौन–सी मजबूरी है कि वह उन्हें ढो रही है?

३. भाजपा के समर्थन से सरकार चला रही महबूबा उसे मुँह चिढ़ाते हुए लक्ष्मण रेखा लाँघ रही हैं और भाजपाई मजबूरन धृतराष्ट्रवादी बनने को मजबूर हैं?

४. लगता है कि भाजपा ने पीडीपी के समक्ष समर्पण कर दिया है।

५. सन् २००३ में भारतीय गुप्तचर एजेंसियों ने महबूबा की हिज्बुल कमांडरों से नजदीकियाँ ताड़ ली थीं, अब महबूबा को यह मुगालता हो गया है कि कश्मीर में तिरंगा उनके हाथों का मोहताज बन गया है।

निवेदन है कि उपर्युक्त प्रेक्षणों पर गहराई से गौर कराने की कृपा करें और यथोचित कार्रवाई कराने के बारे में भी शीघ्र निर्णय लेने का कष्ट करें।

सादर,
भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)	(मुन्ना कुमार शर्मा)	(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महासचिव	राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

यदि लव जेहाद एवं धर्मातरण पर रोक नहीं लगायी गई तो राजस्थान जैसी घटना को रोका नहीं जा सकता-हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर देश में सांप्रदायिकता को बढ़ाया देने वाले संगठित व विदेशी फंडिंग द्वारा संचालित लव जेहाद व धर्मातरण पर पूर्ण रूप से रोक लगाने तथा हिन्दू युवतियों की जिंदगी को नरक में ढकेलने वाले लव जेहादियों को फांसी पर लटकाने व उसकी भारतीय नागरिकता समाप्त करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि यदि देश में लव जेहाद व धर्मातरण को प्रतिबंधित नहीं किया गया तो राजस्थान जैसी अमानवीय घटनाओं को बार–बार घटित होने से कोई नहीं रोक सकता है। लव जेहाद के द्वारा देश को सांप्रदायिक आग में धकेला जा रहा है तथा देश की एकता–अखंडता को नुकसान करने की कार्यवाही की जा रही है। उन्होंने कहा है कि हिन्दुस्तान में लव जेहाद के द्वारा मुस्लिम युवकों द्वारा गैर मुस्लिम लड़कियों को लालच, प्रलोभन, दबाव, बलैकमेलिंग के द्वारा प्यार के जाल में फंसाया जा रहा है। झूठा प्यार दिखाकर उसका मुस्लिम धर्म में धर्मातरण कराया जाता है और तत्पश्चात उसका मुस्लिम युवक के साथ शादी करा दी जाती है। शादी के उपरांत उसे बच्चे पैदा करने की मशीन बनायी जाती है। लव जेहाद एक संगठित अंतर्राष्ट्रीय षड़यंत्र है जिसके द्वारा पूरी दुनिया को इस्लाममय बनाने का कार्य किया जा रहा है। पूरा देश लव–जेहाद की चपेट में है। इसके माध्यम से गैर मुस्लिम लड़कियों को नरक में ढकेला जा रहा है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी की रिपोर्ट से भी यह सिद्ध हो चुका है। यह एक संगठित अपराध है, जिसे विदेशी आंतकी समूहों द्वारा समर्थन व आर्थिक सहयोग मिल रहा है। लव जेहाद को अंजाम देने वाले मुस्लिम युवकों को आईएसआईएस, जमात–उद–दावा व अन्य मुस्लिम संस्थाओं द्वारा लाखों रूपये देकर पुरस्कृत किया जाता है। इस संगठित अपराध के द्वारा देश को सांपद्रायिक आग में धकेला जा रहा है। इसे तत्काल रोकने की आवश्कता है।

शेष पृष्ठ 4 का **डायबिटीज फुट एण्ड......**

६. पैरों की सफाई का भी खास ख्याल रखें। पैरों को गुनगुने पानी और नरम साबुन के साथ डिटॉल डालकर नियमित रूप से धोएँ। उसके बाद साफ तौलिए से अच्छे से पोंछकर ही जूते पहनें। ध्यान रखें कि उंगलियों के बीच भी पानी नहीं रहना चाहिए।

७. आदर्श तरीके से एक जूते को आरामदायक और फिट होना चाहिए जिससे आपके पैरों पर दबाव ना पड़े। आपके लिए टेनिस के जूते अच्छे हैं और इनसे पैरों में होने वाली परेशानी काफी हद तक कम होती है।

८. अगर आपकी त्वचा ड्राई है तो हमेशा ऐसी सलाह दी जाती है कि अच्छी क्वालिटी का माश्चराइजिंग लोशन और क्रीम लगाएँ।

६. बारिश में घर से निकलते वक्त हमेशा अपने साथ जूतों का एक और जोड़ा रखें। ताकि एक जूता गीला हो जाने पर दूसरा पहन सकें। अपने पैरों का ख्याल रखें और अपने डायबेटोलॉजिस्ट से अपनी चिकित्सा सम्बन्धी बातें करें।

१०. अपना ब्लड शुगर कंट्रोल में रखें और इसकी नियमित जाँच कराते रहें।

शेष पृष्ठ 5 का **इतिहास जिससे हम अभी......**

का, राजे रजवाड़ों, विद्यालयों, पुस्तकालयों, देश–विदेश के प्राचीन अभिलेखों, संग्रहालयों आदि का सम्यक अध्ययन व अन्वेषण करना–कराना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इसलिए ही तो लिखा है कि हम अपने इतिहास व प्राचीन गौरव को सत्य रूप में समझ सकेंगे, विश्व के सामने रख सकेंगे, प्राचीन साहित्य आदि का अन्वेषण कर देश की उन्नति कर सकेंगे। जनजातीय स्थानों पर अभी भी अनेक लोकोक्तियाँ गायन वादन के रूप में प्रचलित हैं। विदेशियों के लूटमार के शासन में हमारा अधिकांश साहित्य, ज्ञान–विज्ञान की पांडुलिपियाँ अभिलेखागार, संग्रहालय, गुरुकुल, आश्रम नष्ट प्रायः कर दिये थे परन्तु फिर भी हमारे यहाँ अध्ययन व अन्वेषण हेतु अथाह सामग्री है। खोज करने से ही भारत के गौरव की और नई विशेषताओं का पता चल सकेगा और भविष्य में भारत और उन्नति कर सकेगा। यहाँ का प्रत्येक निवासी अपने आप को गौरवशाली समझेंगे, संस्कृत व संस्कृति का उत्थान होगा। हमारी संस्कृति अमिट है–पहले भी थी, आज भी है। हमें महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के प्रत्येक मन्तव्य पर ध्यान देना चाहिए। इकबाल ने कहा है–

यूनान मिस्त्र रोम सब मिट गये जहाँ से।
बाकी मगर है अब तक नामो निशां हमारा।।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहां हमारा।।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का

पाकिस्तान में उठी मांग, शहीद ....

जॉन पी सांडर्स की हत्या के आरोप में २३ मार्च १६३१ को लाहौर में फांसी दी गई थी। भगत सिंह मेमोरियल फाउंडेशन ने पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सरकार को ताजा याचिका देकर कहा कि भगत सिंह ने उपमहाद्वीप की स्वतंत्रता के लिए अपना बलिदान दिया था। इसने अपने आवदेन में कहा पाकिस्तान के संस्थापक कायदे आजम मोहम्मद अली जिन्ना ने स्वतंत्रा सेनानी को यह कहते हुए श्रद्धांजलि दी थी कि उपमहाद्वीप में उनके जैसा कोई वीर व्यक्ति नहीं हुआ है। संगठन ने कहा भगत सिंह हमारे नायक हैं और वह मेजर अजीज भट्टी की तरह ही सर्वोच्च वीरता पुरस्कार निशान ए हैदर पाने के हकदार हैं जिन्होंने भगत सिंह की वीरता पर लिखा था और उन्हें हमारा नायक तथा आदर्श घोषित किया था। फाउंडेशन ने शादमान चौक का नाम भगत सिंह चौक किए जाने की भी मांग की। संगठन ने कहा जो देश अपने नायकों को भुला देते हैं, वे धरती की सतह से गलत शब्दों की तरह मिट गए हैं। इसने यह भी कहा कि सरकार को शादमान चौक पर भगत सिंह की प्रतिमा भी स्थापित करनी चाहिए जिससे कि पाकिस्तान और विश्व के लोगों को स्वतंत्रता सेनानी के प्रतीक के रूप में प्रेरणा मिले। हाफिज सईद का संगठन जमात उद दावा शादमान चौक का नाम बदलने के प्रस्ताव का कड़ा विरोध कर रहा है और उसने इस मुद्दे पर सिविल सोसाइटी के लोगों को धमकी भी दी है। फाउंडेशन के अध्यक्ष इम्तियाज रशीद कुरैशी ने कहा कि वह इस मामले को लगातार उठाते रहेंगे और मांग मानने के लिए सरकार पर दबाव डालते रहेंगे। कुरैशी लाहौर हाईकोर्ट में भगत सिंह और उनके दो साथियों से संबंधित मामले को फिर से खोलने की लड़ाई भी लड़ रहे हैं जिससे कि इन स्वतंत्रता सेनानियों को निर्दोष साबित किया जा सके। मामला अदालत में लंबित है। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने कहा है कि शहीद भगत सिंह सम्पूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप के नायक थे। उन्होंने संपूर्ण भारत की आजादी के लिये अपने प्राण त्यागे थे। जिसमें पाकिस्तान भी सम्मिलित था। इसलिये उन्हें पाकिस्तान का सर्वोच्च वीरता पुरस्कार अवश्य मिलना चाहिए।

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथकतावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अंतर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामुलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिलें।

केवल इतना ही नही, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री। आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....................................150/- रुपये
द्विवार्षिक.....................................300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....................................1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर
''हिन्दू सभा वार्ता'' के नाम भेजें।
पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय चैक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 1 का

अरुणाचल में चीन की चालाकी....

रावत ने यह टिप्पणी की जनरल रावत ने इस बात पर भी जोर दिया कि पीएलए के सैनिक उत्तरी डोकलाम इलाके में उतनी बड़ी तादाद में नहीं हैं, जितनी संख्या में वह भारत–चीन, गतिरोध के वक्त थे। रावत ने कहा लेकिन हम भी वहां हैं। यदि वे आते हैं तो हम उनका सामना करेंगे। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने भारत सरकार से मांग की है कि चीनी सेना व जासूसों को करारा जवाब मिलें।

शेष पृष्ठ 8 का

पुणे का शनिवारवाड़ा....

जालसाज़ी है। त्रिंबकजी चोर, डाकू नहीं था, वो पेशवे का दीवान था। आरोप अब तक सिद्ध नहीं हुआ था तो अंग्रेजों ने त्रिंबकजी को अपराधी करार दिया था। पेशवे ने अंग्रेजों की माँग को ठुकराया। अचानक एलफिस्टन ने ८ मई १८१७ को त्रिंबकजी डेंगळे की माँग के लिए पुणे शहर की अपनी फौज की सहायता से नाकाबंदी की। तोपें बारूद भरकर तैयार रखी गई थी। हुक्म होते ही पुणे पर अंग्रेजों की तोपें आग बरसाने वाली थी। पुणे में घबराहट पैदा हुई। अफवाहें फैलने लगीं। मराठे हमेशा वीरता की डिंग मारते थे। वे इस समय अपनी समशेरें म्यान करके चुप बैठे थे। पेशवा युद्ध से डरते थे, वे पुणे में खून–खराबा नहीं चाहते थे। समस्या सुलझाने के लिए त्रिंबकजी के बदले में अंग्रेजों ने रायगड, पुरंदर और सिंहगड ये तीन किले की माँग की। क्योंकि पेशवा की सहायता से त्रिंबकजी पुणे से भाग निकला था। अंग्रेजों ने कमजोर पेशवा को 'पुणे करार' करने को मजबूर किया। १३ जून १८१७ को ये तहनामा हुआ। इस तहनामे के कारण मराठों को अंग्रेजों की हुकूमत माननी पड़ी। मराठे निस्तेज हुये। पेशवे की हुकूमत पुणे शहर के इर्दगिर्द सिर्फ पाँच–छ मैल तक ही चलने लगी। इस तह के कारण बाजीराव सिर्फ पुणे के पेशवा ही बने। इसलिए बाजीराव इस वक्त खुद की ही सोचने लगा था। अंग्रेजों का प्रभाव शनिवारवाडे की राजनीति पर बढ़ता ही जा रहा था। बाजीराव को एहसास हुआ कि वह खुद अंग्रेजों ने फैलाए हुए जाल में फँस गया है। अंग्रेजों से छुटकारा पाने के लिए उसने आखिरकार फैसला करने की सोचकर अंग्रेजों के ऊपर हमले का आदेश किया। युद्ध की घोषणा हुई।

(शेष अगले अंक में)

शेष पृष्ठ 9 का

देश विभाजन का खूनी.....

वहाँ से निकल जाने के अवसर की ताक में थे। ग्रामीण इलाकों में भी स्थिति वैसी ही बुरी थी। फिर भी गाँव वालों के लिए सीमावर्ती जिलों से भाग कर भारत में चले जाने की आसानी थी। समूहों में आक्रमण की बहुतेरी घटनाएँ हुई और जन–धन की भारी क्षति हुई। पटटोकी में २० अगस्त को धावा बोला गया जिसमें करीब ढाई सौ गैर मुस्लिमों की हत्या कर दी गई। गैर मुसलमानों की दुकानों को लूट कर उनमें आग लगा दी गई। इस आक्रमण में बलूच मिलिटरी ने भाग लिया था। कासुर में अनेक गैर मुस्लिम घरों को जला कर नष्ट कर दिया गया। इस शहर में १८ अगस्त को दंगा भड़का और लगभग नब्बे गैर मुसलमानों की हत्या की गई और उससे भी बहुत अधिक लोग आहत हुए। गैर मुसलमान कासुर रेलवे स्टेशन पर गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे कि उन पर आक्रमण हुआ, जिसमें बहुत लोग मारे गये।

समीक्षा : जेहाद की प्रकृति के अनुकूल ही ऊपर वर्णित सभी घटनाएँ हो रही थीं–एकतरफा, निर्दोषों पर आसुरी अत्याचार। क्या इन अधिकारियों के मुस्लिम मित्र नहीं थे? किसी ने भी किसी को बचाने या सुरक्षित रूप से निकालने में सक्रिय सहायता पहुँचाई? ऐसा वे कैसे कर सकते थे, जबकि मजहब ने उन्हें खुला शत्रु घोषित किया है। ''काफिर तो तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।'' (कुरान ४:१०१) आगे आने वाले दिनों में वही सब पुनः दोहराया जाएगा। हिन्दू जितना अनजान, बेखबर और भ्रमित बने रहेंगे मुसलमानों के लिए उतना ही अच्छा रहेगा। इसके लिए विश्वविद्यालयों और बौद्धिक जगत में कुछ भ्रमित और नासमझ हिन्दू प्रोफेसर भ्रम फैलाने और सत्य को ढकने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। वे सफल इसलिए हो रहे हैं क्योंकि हिन्दू का सामाजिक ताना–बाना नहीं है। हिन्दू हर कहीं एक जगह नियमित एकत्र होकर संयुक्त रूप से विचार–विमर्श प्रारम्भ कर दें तो सारा भ्रमजाल तुरंत छट जाएगा और सभी जानकार और सतर्क हो जाएँगे। साथ ही गद्दारों का पर्दाफाश भी होगा। चोर, बेइमान और दुश्चरित्र व्यक्ति समाज का सामना करने का साहस नहीं करता, इसलिए सामाजिक आयोजनों में रुचि नहीं लेता और उससे दूर रहना चाहता है। इस कारण ऐसे प्रयासों में बाधा पहुँचती है। झिझक त्याग कर कुछ लोग आगे बढ़ें और अपने ऐतिहासिक कर्तव्य को पूरा करें तो उनको देख कर हैरानी होगी कि कैसे इतनी शीघ्रता से लोग उद्वेलित हो गए। पर यह सतर्कता अवश्य रखनी होगी कि अन्याय की प्रतिक्रिया में उत्तेजित लोग सीधा संघर्ष की राह न पकड़ें। यह कार्य सिर्फ जागरण और विचार–विमर्श के लिए हो।

यह भी सच है

देश की आत्मा में अनास्था

दो बार (दस वर्ष) उपराष्ट्रपति के पद पर रहने वाले हामिद अंसारी १० अगस्त को अवकाश प्राप्त कर चुके है। परंतु जाते जाते भी 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' को कोस रहें है। क्या उनको अपने इस उच्च पद की गरिमा का भी ध्यान नही रहा? वे केवल दिखावें को मुस्लिम समाज की चिंता करते हुए यह मानते है कि भारत में मुसलमान अभी असुरक्षा की भावना से ग्रस्त है। जबकि उन्हें यह भी अच्छी प्रकार से समझना चाहिये की वे केवल मुस्लिम पोषित राजनीति के कारण ही इस पद पर दो बार चुने गये। समाचार पत्रों में इनकी विदेश यात्राओं का उल्लेख अवश्य होता रहा है, परंतु इन्होंने मुस्लिम समाज के लिये क्या क्या किया उसका कोई समाचार सम्भवतः नही आया? यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण व दुखद है कि राष्ट्र के अतिसम्मानित पद पर रहने वाले एवं समस्त सरकारी सुविधाओं का भोग करके वैभवशाली जीवनयापन करने वाले उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी को फिर भी ऐसा क्यों लगता है कि मुसलमानो में घबराहट है और उनमें सुरक्षा का अभाव बना हुआ है? उन्होंने उच्च पदों पर रहते हुए कभी भी यह विचार नही दिया कि मुस्लिम समाज देश में कैसे भयभीत है और उसका क्या उपचार करना चाहिये? क्या उन्हें पाकिस्तान में भारत से गये हुए मुसलमानों के कष्टों का ज्ञान नही? क्या वे हमारे धर्मनिरपेक्ष देश में प्रतिवर्ष हजारो करोड़ रुपयों से मुस्लिम समुदाय की केंद्र व राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं को भूल रहे है। अल्पसंख्यकों के नाम पर मुसलमानों का निरंतर सशक्तिकरण होने के उपरांत भी भूतपूर्व हो के उपराष्ट्रपति के ऐसे विचार अत्यंत निंदनीय व अशोभनीय है। उन्होंने भारत की पवित्र भूमि पर जन्म लेकर व सदैव भारत सरकार के महत्वपूर्ण पदों पर रहकर भी प्रायः भारतीय संस्कृति का सम्मान नही किया। विशेषतौर पर रामलीलाओं के मंचो पर उनके व्यवहारों पर राष्ट्रवादी समाज को आपत्ति ही रही। ऐसा क्यों है कि इतना सब कुछ पाने के बाद भी हामिद अंसारी जैसे मुस्लिम समाज के लोग देश की मुख्य धारा से जुड़ना नही चाहते और राष्ट्र की आत्मा के प्रति भी अनास्था रखते है? क्या ऐसी मानसिकता वाले मुसलमान उच्च पद पाने के उपरांत भी कभी सर्वे भवन्तु सुखिनः की भारतीय संस्कृति को अपनायेगें? यहां यह भी उल्लेख करना अनुचित नही होगा कि अगर हामिद अंसारी को राष्ट्रपति पद पर आसीन कर दिया जाता तो वे जाते जाते ऐसा विवादित कथन नही देतें और संभवतः भविष्य के लिये बचा कर रखते। लेकिन हमारे प्रधानमंत्री जी की यह कूटनीति समझो या सरकारी औपचारिकता जो उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के कारण ही उपराष्ट्रपति हामिद अंसारी के अवकाश की अंतिम बेला पर उनका सम्मान रखते हुए उनके कार्यकाल की सराहना करके निभाई हैं।

भगवा दिवस पर भारद्वाज बोले आयोध्या में भगवान श्री राम का भव्य मंदिर बनकर रहेगा

हांसी, ६ दिसम्बर सुप्रीम कोर्ट में हिंदू महासभा मजबूती के साथ आयोध्या में भगवान श्री राम मंदिर का निर्माण हो इसको लेकर केस लड़ रही है और २०१८ में निश्चित रूप से हमारे पक्ष में कोर्ट का फैसला आएंगा। उक्त शब्द आज हिंदू महासभा के प्रवक्ता ललित भारद्वाज ने बजरंग आश्रम रोड़ पर भाईचारा कार्यालय में महासभा के हल्का प्रधान अनील चावला की अध्यक्षता में भगवा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ही। भारद्वाज ने संबोधित करते हुए कहा कि इलाहाबाद हाईकोर्ट ने एक हिस्सा हिंदू महासभा को देने का फैसला सुनाया था लेकिन अब हिंदू महासभा आयोध्या की जमीन पर सिर्फ भव्य श्री राम का मंदिर बने इसको लेकर मजबूती के साथ सुप्रीम कोर्ट में केस लड़ रही है, और सुप्रीम कोर्ट में इस केस का जल्द निपटारा करने के लिए ८ फरवरी से हर रोज सुनवाई करने का फैसला किया है जो कि स्वागत के काबिल है। उन्होंने कहा कि भारत देश के हिंदुओं की आस्था है कि भगवान का जल्द बनवास कटे और आयोध्या मंदिर निर्माण का कार्य शुरू हो। उन्होंने कहा कि हिंदू महासभा मंदिर को लेकर शुरू से लकर अब तक पैरवी कर रही है। भगवा दिवस के अवसर पर कार्य कर्ताओं ने भगवान श्री राम के नारे लगाकर भगवान राम को याद किया। इस अवसर पर पार्षद प्रतिनिधि सीमांत चौधरी ने हिंदू महासभा में शामिल होने की इच्छा जाहिर की। जिस पर हिंदू महासभा के हल्का प्रधान अनील चावला ने जल्द ही हिंदू महासभा मुख्यालय दिल्ली में आजीवन सदस्य दिलवाने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर हिंदू महासभा के नेता पार्षद अजय सैनी, विनोद परूथी, शम्पी ढींगरा, पंकज मेहता, सुनील कुमार, सुरेन्द्र टारियां, रिंकल अनेजा सहित काफी संख्या में सदस्य मौजूद थे।

कबिरा खड़ा बजार में

अभी भी समय है

हरियाणा के यमुना नगर में एक स्कूल में १२वीं के एक छात्र ने अपनी प्रिंसिपल की गोली मारकर हत्या कर दी। छात्र ने पूछताछ के दौरान पुलिस को बताया कि शिक्षकों की शिकायत करने पर प्रिंसिपल ने उसे सबके सामने डांटा था, जिससे वह क्षुब्ध था। उसने अपने घर से पिता की रिवाल्वर निकाली, स्कूल आया और प्रिंसिपल के कमरे में जाकर ही उन्हें गोली मारी। इस घटना पर एक बार फिर संवेदनशील समाज चिंता में है कि आखिर हमारे बच्चों को क्या होता जा रहा है। अभी पिछले हफ्ते ही लखनऊ के ब्राइट लैंड स्कूल में पहली कक्षा के छात्र को शौचालय ले जाकर सातवीं में पढ़ने वाली एक छात्रा ने चाकू मारा। बताया जा रहा है कि छात्रा स्कूल में छुट्टी कराना चाहती थी, इसलिए उसने ऐसा घातक काम किया। पिछले साल सितंबर में रेयान इंटरनेशनल में प्रद्युम्न की हत्या भी एक बड़े बच्चे ने की थी, ताकि वह परीक्षा से बच सके। बीते दिनों ग्रेटर नोएडा में एक छात्र ने अपनी मां और बहन की हत्या की, क्योंकि उसे पढ़ाई के लिए टोका जाना पसंद नहीं था। इन तमाम घटनाओं में बच्चे ही अपराध में शामिल हैं, इसलिए आरोपी भी उन्हें ही बनाया गया है। दोषी पाए जाने पर सजा भी उन्हें ही मिलेगी। क्या हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हमें क्या हो गया है। हमने अपनी महत्वाकांक्षाओं का कैसा बोझ अपने बच्चों पर डाल दिया है कि उनकी मासूमियत पर हिंसा का मुलम्मा चढ़ गया है। आखिर हम अपने बच्चों को सभ्य नागरिक और बेहतर इंसान बनाने के लिए स्कूल भेजते हैं या अपराधी बनाने के लिए, बच्चे आंख खोलते नहीं कि स्कूल की चारदीवारी की कैद उन्हें मिलती है। वे अपने नन्हें हाथ–पैरों को संभाल भी नहीं पाते कि उन पर बस्ते का बोझ आ जाता है। उनके अच्छे अंक आएं तो उपहारों से नवाजा जाता है और खराब अंक आएं तो सबके सामने डांट पड़ती है। दूसरों के बच्चों से तुलना करना तो जैसे मां–बाप का परम कर्तव्य है। हम सोचते ही नहीं कि बच्चे छोटे हैं तो क्या हुआ, आत्मसम्मान उनका भी है। उनकी अपनी नर्म, नाजुक ख्वाहिशें हैं, जिन्हें पनपने के लिए जगह भी मिलनी चाहिए और खाद–पानी भी। लेकिन अभी तो हमारी शिक्षा व्यवस्था ऐसी हो चुकी है कि बच्चे साल भर परीक्षा देते रहते हैं, ग्रीष्मकालीन, शीतकालीन अवकाश के नाम पर जो गिनी–चुनी छुट्टियां मिलती हैं। उनमें ढेर सारा होमवर्क और अर्थहीन प्रोजेक्ट करने में जुटे रहते हैं। इन सबमें स्टेशनरी का व्यवसाय खूब बढ़िया चलता है, हालीडे प्रोजेक्ट करने का बिजनेस भी इन दिनों चल निकला है। मां–बाप भी खुश रहते हैं कि चलो महंगे स्कूल में बच्चे को पढ़ा रहे हैं, तो लागत पूरी वसूल होनी चाहिए भले इसमें बच्चे की कुंठाएं बढ़ें, उन्हें इससे मतलब नहीं। स्कूलों के पाठ्यक्रमों में भी नए–नए विषय जुड़ते जा रहे हैं और नैतिक शिक्षा, शारीरिक खेलकूद, बागवानी, चित्रकारी जैसे विषयों को समय की बबार्दी समझा जाता है। ये विषय स्कूल में रहते भी हैं तो इनका कोई महत्व नहीं होता, सारा जोर गणित, विज्ञान पर रहता है, मानो देश का हर दूसरा बच्चा वैज्ञानिक ही बनने वाला है। स्कूलों में खेल के मैदान सिमटते जा रहे हैं और रिहायशी इलाकों मेंभी बच्चों को खेलने के लिए जगह नहीं मिलती जहां जाकर वे अपनी स्वाभाविक ऊर्जा का रचनात्मक उपयोग कर सकें। इस आयु में ऊर्जा को जबरन दबाया जाएगा, तो वह गलत तरीकों से ही बाहर आएगी। बच्चों के हाथों में मोबाइल देकर हम समझते हैं कि मां–बाप होने का एक और फर्ज अदा कर दिया। लेकिन उनसे उनके मन की बात सुनने का कितना वक्त हमने निकाला, यह भी सोचना चाहिए। बच्चों की भावनाओं को न समझ पाने का दुष्परिणाम एक के बाद एक भयावह घटनाओं के रूप में सामने आ रहा है। यह समाज के लिए खतरे की घंटी है, जिसे सुनकर संभल जाना चाहिए।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट की गई डाक पंजीकरण संख्या D.L. (N.D.)–11/6129/2016-17-18

रजि सं. 29007/77

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

दिनांक 07 फरवरी से 13 फरवरी 2018 तक

प्राप्तेषु

स्वत्वाधिकारी अखिल भारत हिन्दू महासभा के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक मुन्ना कुमार शर्मा द्वारा स्कैन 'एन' प्रिन्ट, 115, कीर्ति नगर इन्डस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली मुद्रित तथा हिन्दू महासभा भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित। दूरभाष 011-23365138, 011-23365354

E-mail : akhilbharat_hindumahasabha@yahoo.com, editor.hindusabhavarta@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादक : मुन्ना कुमार शर्मा, प्रबंध सम्पादक : वीरेश कुमार त्यागी

इस पत्र में प्रकाशित लेख व समाचारों की सहभागिता, संपादक-प्रकाशक की नहीं है। सम्पूर्ण विवादों का न्यायिक क्षेत्र नई दिल्ली है।